

वर्ष-15, अंक-05

वि.सं. 2076, युगाब्द 5121

जुलाई 2019

मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/-

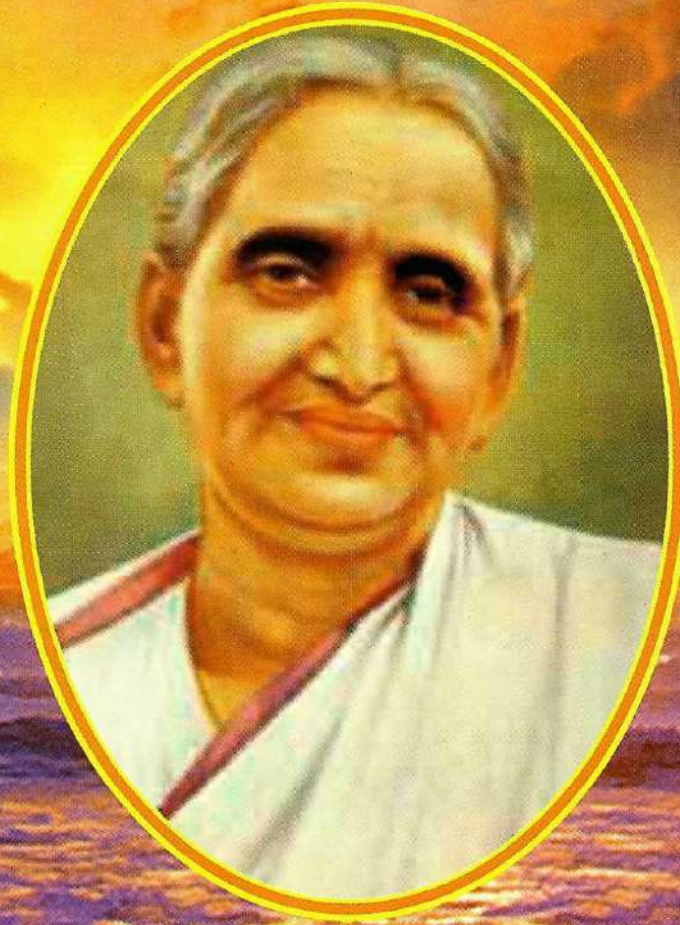
आजीवन : रु. 2000/-

वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका



सेवा संवाद



लक्ष्मीबाई केलकर

नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में नेत्र परीक्षण



नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में नेत्र परीक्षण करते हुए चिकित्सक गण



भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-05

वि.सं. 2076, युगाब्द 5121

जुलाई 2019

मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/-

आजीवन : रु. 2000/-

वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ० अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ० देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक

डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक

राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक

विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक

जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020

दूरभाष : 0522-4001837, 2789406

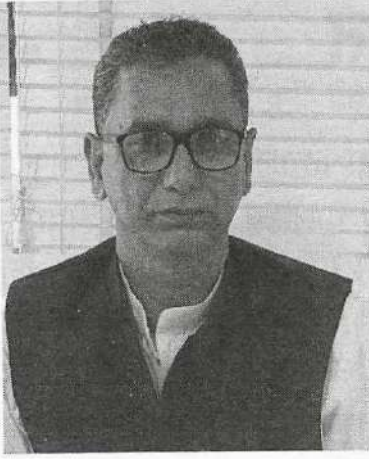
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।



हम कब होंगे पानी के लिए जिम्मेदार



‘पानी रे पानी तेरा रंग कैसा, सौ साल जीने के उम्मीदों जैसा।’ 1972 में बनी ‘शोर’ फिल्म के गीत की ये लाइनें आज भी प्रासंगिक हैं। वाकई पानी का महत्व हमारे जीवन में इतना अधिक है

कि इसके दम पर हम सौ साल तक भी जीने की उम्मीदें लगा सकते हैं वहीं पानी न मिले तो हम अपने कल को भी सुरक्षित नहीं कह सकते।

संयुक्त राष्ट्र के आकलन के मुताबिक पृथ्वी पर पानी की कुल मात्रा लगभग 1400 मिलियन घन किलोमीटर है, जिसमें से 97.5 फीसदी पानी समुद्र में है जो पीने योग्य नहीं है। मात्र 2.5 फीसदी पानी ही पीने योग्य है जिसमें 1.5 फीसदी बर्फ के रूप में है, 1 फीसदी पानी नदी, सरोवर, कुंओं, झरनों और झीलों में है।

संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट पर मौजूद आंकड़ों के मुताबिक, दुनिया के हर नौवें व्यक्ति के पास पीने के साफ पानी का अभाव है जिसकी वजह से हर साल लाखों लोग बीमारियों का शिकार होते हैं और उनकी मौत हो जाती है। दुनिया में 2.1 अरब और भारत में करीब 16 करोड़ से अधिक लोग ऐसे हैं जिन्हें पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है, वहीं 26 करोड़ से ज्यादा लोगों को पानी के लिए 30 मिनट की यात्रा करनी पड़ती है।

एक विश्लेषण के मुताबिक दुनियाभर के 200 शहर और 10 मेट्रो सिटी ‘डे जीरो’ की ओर बढ़ रहे हैं। ‘डे जीरो’ यानि बहुत जल्दी इन जगहों पर वह दिन आने वाला है जब यहां नलों में पानी आना बंद हो जाएगा।

भूजल बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 1990 के बाद से भूजल स्तर में काफी तेजी से गिरावट आ रही है। भूजल स्तर यदि इसी रफ्तार से गहरा होता गया तो बहुत अधिक गहराई से जो पानी निकाला जाएगा वह

पीने के योग्य नहीं होगा, उसमें आर्सेनिक और फ्लोराइड की अधिकता के चलते बीमारियां बढ़ेंगी। रिपोर्ट्स के मुताबिक 2050 तक दुनिया की आबादी 10 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में भविष्य में मौजूदा समय से 30 फीसदी अधिक पानी की जरूरत और होगी, पानी उपलब्ध न होने पर दुनिया के 36 फीसदी शहर पानी की गंभीर समस्या से जूझेंगे। जानते हैं कहां कहां और कैसे पानी बचाया जा सकता है—

- नहाने के लिए यदि आप स्वीमिंग पुल का इस्तेमाल करते हैं तो जान लें कि स्वीमिंग पुल से हर महीने 3,700 लीटर पानी भाप बनकर उड़ जाता है।
- बाथ टब में नहाने में जहां 300 से 500 लीटर पानी खर्च होता है, वहीं सामान्य रूप से नहाने में 100 से 150 लीटर ही पानी खर्च होता है।
- दो से चार तक कपड़े यदि हाथ से धोए जाएं तो 25 से 30 लीटर पानी खर्च होता है, वहीं वॉशिंग मशीन में 75 लीटर पानी लगता है। वॉशिंग मशीन का उपयोग तभी करें जब बहुत से कपड़े एक साथ धोने हों।
- टूथ ब्रश करते समय यदि नल लगातार खुला रहता है तो प्रति व्यक्ति एक बार में 4 से 5 लीटर पानी बह जाता है। यानि महीने में 150 लीटर पानी की बर्बादी रोकी जा सकती है सिर्फ उपयोग के समय नल खोलने से।
- शॉवर से नहाने में एक व्यक्ति 75 लीटर तक पानी खर्च कर देता है। शॉवर की जगह यदि बाल्टी से नहाया जाए तो 80 प्रतिशत तक जल बचाया जा सकता है।
- बर्तन धोने में यदि नल की जगह बाल्टी या टब का इस्तेमाल किया जाए तो चार लोगों के परिवार में रोजाना करीब 20 से 25 लीटर पानी बच जाता है।
- शेविंग करते समय नल खुला छोड़ने से पांच से सात लीटर पानी बर्बाद होता है इसके बजाय मग में पानी लेकर शेविंग करने से एक महीने में करीब 200 ली. पानी बचाया जा सकता है।
- कार को यदि बाल्टी में पानी लेकर साफ किया



जाए तो महज 20 लीटर पानी लगता है वहीं पाइप से कार धोने में एक बार में डेढ़ सौ लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। बाल्टी से कार धोकर हर बार आप करीब 130 लीटर पानी बचा सकते हैं।

- महानगरों में पाइप लाइनों के वॉल्व की खराबी से प्रतिदिन 17 से 44 प्रतिशत पानी बेकार बह जाता है। खराब वॉल्व को तुरंत सुधराएं।
- टॉयलेट लीक होने की समस्या भी आम है, यदि इसे रोक लिया जाये, तो पांच हजार लीटर पानी हर महीने बचाया जा सकता है। फ्लश के लिए टैंक छोटे बनवाएं जाएं या बॉल्टी का इस्तेमाल किया जाए तो प्रतिदिन करीब सौ से सवा सौ लीटर पानी बचाया जा सकता है।
- प्रत्येक आरओ मशीन में हर साल 14 हजार लीटर

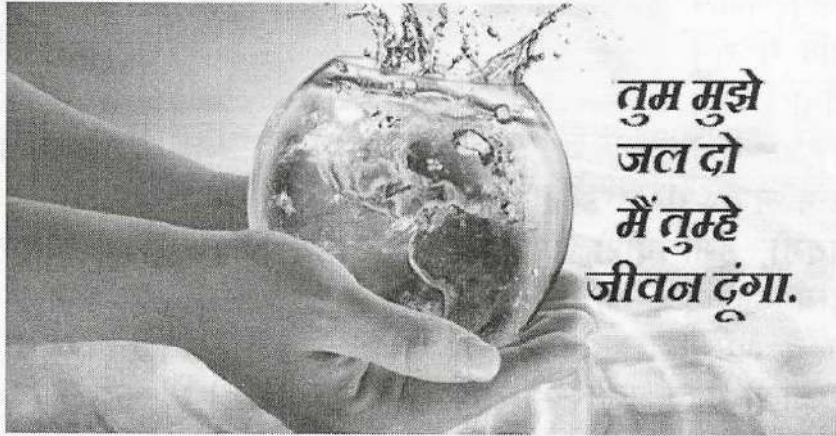
पानी नष्ट हो जाता है इस पानी का इस्तेमाल पेड़-पौधों को सींचने, टॉयलेट और गाड़ी धोने में किया जा सकता है।

- बाथरूम में लीकेज से प्रति घंटे एक लीटर तक पानी बर्बाद हो जाता है। लीकेज हो तो तुरंत सुधरवा लिया जाना चाहिए।

अलावा इसके इंसानी प्रयत्नों से ही यह भी संभव है कि जंगलों का विकास किया जाए, नदियां और अन्य जल स्रोतों का संरक्षण किया जाए उनके आस-पास कटाव को रोका जाए, बारिश के जल का अधिक से अधिक संग्रहण किया जाए।

दोस्तों, हमारे ऐसे छोटे-छोटे, थोड़े से प्रयत्नों से पानी जैसी बड़ी समस्या पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

□ राजेश



आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य-गीत, कथा-कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य है। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें। पुनश्च, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुग्रहीत करें। हमारा पता है—

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद

सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश

मो0 : 9450020514, 9454049918





ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का जीवन परिचय

(70 वर्ष की आयु पूर्ण कर 29 जुलाई 1891 को शारीरिक बन्धनों से मुक्ति लेकर पंचतत्व में विलीन हो गये थे। आज हम सभी उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए। उनके आदर्शों पर चलने का शुभ संकल्प करते हैं। — सम्पादक)

जन्म परिचय :

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में वीरसिंह नामक गांव में सन् 1891 में एक अत्यन्त गरीब बंगाली परिवार में हुआ था।

निर्धन परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने अपने शिक्षा, संस्कार, सादगी, ईमानदारी, परिश्रम, दयालुता व स्वावलम्बन के ऐसे आदर्श प्राप्त किये, जिनके कारण वे अमर हो गये। जब वे गर्भावस्था में थे, तब उनकी माता पागल हो गयी थी। घर की आर्थिक तंगी के कारण माता का इलाज उनके पिता चाहकर भी नहीं कर पाये।

एक दिन उनके पिता द्वार पर भिक्षा मांगने आये एक संन्यासी को देखकर यह कहकर रोने लगे कि उनके घर एक मुट्ठी अनाज भी भिक्षा में देने के लिए नहीं है। वे तो अपनी पागल पत्नी का इलाज भी इसी वजह से नहीं करा पा रहे हैं।

संन्यासी ने हंसते हुए कहा— “अरे बावले! तेरी पत्नी तो एक तेजस्वी बालक के गर्भ में आ जाने के कारण उसके तेज से पागल—सी हो गयी है। घबराने की कोई बात नहीं, सब कुछ ठीक हो जायेगा।” हुआ भी ठीक वैसा ही, जैसा कि उस संन्यासी ने कहा था। तेजस्वी ईश्वरचन्द्र का जन्म होते ही माता की अवस्था सामान्य हो गयी।

वे अपनी धार्मिक तथा दयालु विचारों वाली



माता से रामायण, महाभारत, श्रवण की मातृभक्ति तथा वीर शिवा की कहानियां सुना करते थे। पांच वर्ष की अवस्था में गांव की पाठशाला में भरती होने के बाद उनकी बुद्धिमानी और सदचरित्रता से सभी अध्यापक अत्यन्त प्रभावित थे। कक्षा में यदि कोई लड़का कमजोर या असहाय होता, तो उसके पास स्वयं जाकर उसे पढ़ा देते और उसकी यथासम्भव सहायता करते।

वे अपने पिता की कठोरता को भी उनका आशीर्वाद समझते थे।

पढ़ाई के समय उनके पिता इतने कठोर हो जाया करते थे कि कई बार विद्यासागर की आखों में सरसों या मिट्टी का तेल भर दिया करते थे। कभी—कभी तो उनकी चोटी को रस्सी से बांधकर खूंटी में अटका दिया करते थे, ताकि विद्यासागर को पढ़ते समय नींद न आ जाये। यद्यपि पिता की कठोरता उन्हें कभी—कभी बहुत खटकती भी थी, किन्तु वे यह भी मानते थे कि इसी कठोरता के फलस्वरूप वे अपनी कक्षा में हमेशा अब्बल आते हैं।

बाल्यावस्था में वे हकलाते थे, इस कारण अंग्रेज अध्यापक ने उन्हें दूसरी श्रेणी में पास किया। इस बात पर विद्यासागर इतना अधिक रोये कि उन्होंने कई दिनों तक ठीक से भोजन ग्रहण तक नहीं किया। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद उनके पिता घोर आर्थिक तंगी के बाद भी उन्हें कलकत्ता ले गये। अपने गांव से पैदल ही कलकत्ता पहुंचे।

हजारों विद्यार्थियों और अध्यापकों की भीड़ में कॉलेज की ओर से उन्हें न केवल विद्यासागर की उपाधि दी गयी, वरन उनका एक चित्र भी कॉलेज के भवन में लगा दिया।



21 वर्ष की अवस्था में विद्यासागर की उपाधि मिलने के बाद कई संस्थाओं से उन्हें नौकरी का आमन्त्रण मिला, किन्तु अन्याय, बेईमानी और दबाव के बीच काम न कर सकने वाले विद्यासागर ने कई नौकरियों से इस्तीफा दे दिया।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का योगदान :

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने कई अन्य सक्रिय सुधारकों के साथ लड़कियों के लिए स्कूल खोले। ऐसा इसलिए था क्योंकि उनके लिए शैक्षिक सुधार किसी भी अन्य सुधार से बहुत महत्वपूर्ण था। उनका मानना था कि महिलाओं की स्थिति और सभी प्रकार के अन्याय और असमानताएं जिनका वे सामना कर रही थी, केवल शिक्षा के माध्यम से बदल सकती हैं।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने सभी जातियों, धर्म और लोगों के बावजूद सभी पुरुषों और महिलाओं को समान शिक्षा प्रदान करने के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। उन्होंने अपने

संस्कृत महाविद्यालय में उच्च जाति के लोगों की बजाय निम्न जातियों के लोगों को अनुमति प्रदान की थी।

विद्यासागर ने विशेष रूप से अपने मूल बंगाल में भारत में महिलाओं की स्थिति का उत्थान किया। वे एक सामाज सुधारक थे और वे रूढ़िवादी हिंदू समाज को भीतर से बदलना चाहते थे। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह पर अमल शुरू किया और बहुपत्नी प्रथा के खिलाफ कार्य किया।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अनेक किताबें लिखी हैं और इस तरह बंगाली शिक्षा प्रणाली को काफी हद तक समृद्ध किया है। उनके द्वारा लिखी गई सभी किताबें आज भी पढ़ी जाती हैं।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर वास्तव में एक महान व्यक्तित्व और सुधारक थे। आज भारत को इस तरह के समर्पित, विनम्र और दृढ़ व्यक्तित्वों की जरूरत है जो समाज की भलाई के लिए पूरी तरह से अपने आप को समर्पित करके आवश्यक सुधार ला सकें।



व्रत-त्यौहार जुलाई 2019

दिनांक	दिन	व्रत-त्यौहार
01	सोमवार	मास शिवरात्रि व्रत
02	मंगलवार	स्नान-श्राद्ध भौमवती अमावस्या
04	गुरुवार	रथयात्रा, श्रीराम-बलराम रथोत्सव, चन्द्रदर्शन
06	शनिवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत
08	सोमवार	स्कन्द-षष्ठी व्रत, कुमार षष्ठी व्रत
10	बुधवार	भडुली नवमी, कन्दर्प नवमी
11	गुरुवार	आशा दशमी, गिरिजा पूजा
12	शुक्रवार	हरिशयनी एकादशी व्रत
13	शनिवार	वामन द्वादशी, चातुर्मास आरंभ
14	रविवार	प्रदोश व्रत, जयापार्वती व्रत
15	सोमवार	चौमासी चौदस-जैन
16	मंगलवार	स्नान-दान पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा, खग्रास चन्द्रग्रहण
17	बुधवार	कर्क सक्रांति दिन
22	सोमवार	श्रा. सोमवार व्रत, नागपंचमी-वं. शुक्र अस्त पूर्व में
23	मंगलवार	भौमव्रत, दुर्गायात्रा, हनुमदर्शन
28	रविवार	कामदा एकादशी व्रत सबका
29	सोमवार	प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत
30	मंगलवार	मास शिवरात्रि व्रत, हनुमान दर्शन भौम व्रत, दुर्गा यात्रा
31	बुधवार	श्राद्ध की अमावस्या



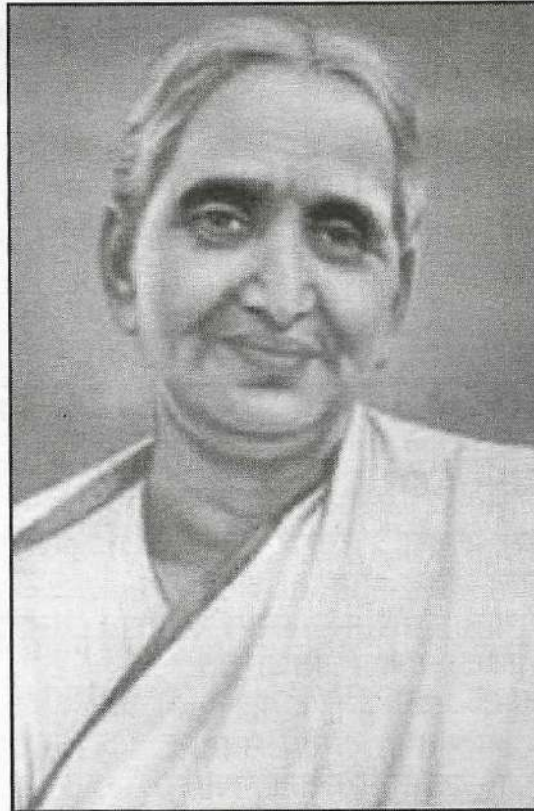
लक्ष्मीबाई केलकर

(वन्दनीया लक्ष्मीबाई केलकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आज भी हमारे—लिए एक आदर्श है। कर्तव्य पथ पर अडिग रह कर कुरीतियों के विपरीत आवाज उठाने तथा न्याय मार्ग पर सतत क्रियाशील रहने की प्रेरणा हमें उनसे मिलती रहेगी। इसी आशा और विश्वास के साथ आज हम सभी लोग मिल कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। — सम्पादक)

लक्ष्मीबाई केलकर भारत की प्रख्यात समाज सुधारक थीं। उन्होंने 'राष्ट्र सेविका समिति' नामक एक संगठन की स्थापना की थी। उनका मूल नाम कमल था, किन्तु लोग उन्हें सम्मान से 'मौसी जी' कहा करते थे। बंगाल विभाजन के विरुद्ध हो रहे आन्दोलन के दिनों में छह जुलाई, 1905 को नागपुर में कमल नामक बालिका का जन्म हुआ। तब किसे पता था कि भविष्य में यह बालिका नारी जागरण के एक महान संगठन का निर्माण करेगी।

लक्ष्मीबाई केलकर का जन्म नागपुर में हुआ था। 14 वर्ष की आयु में उनका विवाह वर्धा के एक विधुर वकील पुरुषोत्तम राव केलकर से हुआ। उनके छः पुत्र हुए।

रूढ़िग्रस्त समाज से टक्कर लेकर उन्होंने अपने घर में हरिजन नौकर रखे। गान्धी जी की प्रेरणा से उन्होंने घर में चरखा मँगाया। एक बार जब गान्धी जी ने एक सभा में दान की अपील की, तो लक्ष्मीबाई ने अपनी सोने की जंजीर ही दान कर दी।



1932 में उनके पति का देहान्त हो गया। अब अपने बच्चों के साथ बाल विधवा नन्द का दायित्व भी उन पर आ गया। लक्ष्मीबाई ने घर के दो कमरे किराये पर उठा दिये। इससे आर्थिक समस्या कुछ हल हुई। इन्हीं दिनों उनके बेटों ने संघ की शाखा पर जाना शुरू किया। उनके विचार और व्यवहार में आये परिवर्तन से लक्ष्मीबाई के मन में संघ के प्रति आकर्षण जगा और उन्होंने संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार से भेंट की। उन्होंने 1936 में स्त्रियों के

लिए 'राष्ट्र सेविका समिति' नामक एक नया संगठन प्रारम्भ किया। आगामी दस साल के निरन्तर प्रवास से समिति के कार्य का अनेक प्रान्तों में विस्तार हुआ।

डा. हेडगेवार ने उन्हें बताया कि संघ में स्त्रियाँ नहीं आती, किन्तु उन्हें प्रथम संगठन बनाने हेतु प्रेरित किया, तब उन्होंने 1936 में स्त्रियों के लिए 'राष्ट्र सेविका समिति' नामक एक नया संगठन प्रारम्भ किया, जो बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रथम अनुसंग घोषित हुआ। जहाँ

अन्य महिला संगठन अपने अधिकार के बारे में, अपनी प्रतिष्ठा के बारे में महिलाओं को जागृत करते हैं, वहीं राष्ट्र सेविका समिति बताती है कि राष्ट्र का एक घटक होने के नाते एक मां का क्या कर्तव्य है? समिति उन्हें जागृत कर उनके भीतर छिपी राष्ट्र निर्माण की बेजोड़ प्रतिभा का दर्शन कराती है। साथ ही अपनी परम्परा के अनुसार परिवार—व्यवस्था का ध्यान रखते हुए उन्हें राष्ट्र निर्माण की भूमिका के



प्रति जागृत करती है। समिति का ध्येय है कि महिला का सर्वोपरि विकास हो किन्तु उसे इस बात का भी भान होना चाहिए कि मेरा यह विकास, मेरी यह गुणवत्ता, मेरी क्षमता राष्ट्रोन्नति में कैसे काम आ सकती है।

वन्दनीया मौसी जी ने इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पद्धति पर राष्ट्र सेविका समिति का कार्य प्रारम्भ किया। समिति के कार्यविस्तार के साथ ही लक्ष्मीबाई ने नारियों के हृदय में श्रद्धा का स्थान बना लिया। सब उन्हें 'वन्दनीया मौसीजी' कहने लगे। आगामी दस साल के निरन्तर प्रवास से समिति के कार्य का अनेक प्रान्तों में विस्तार हुआ।

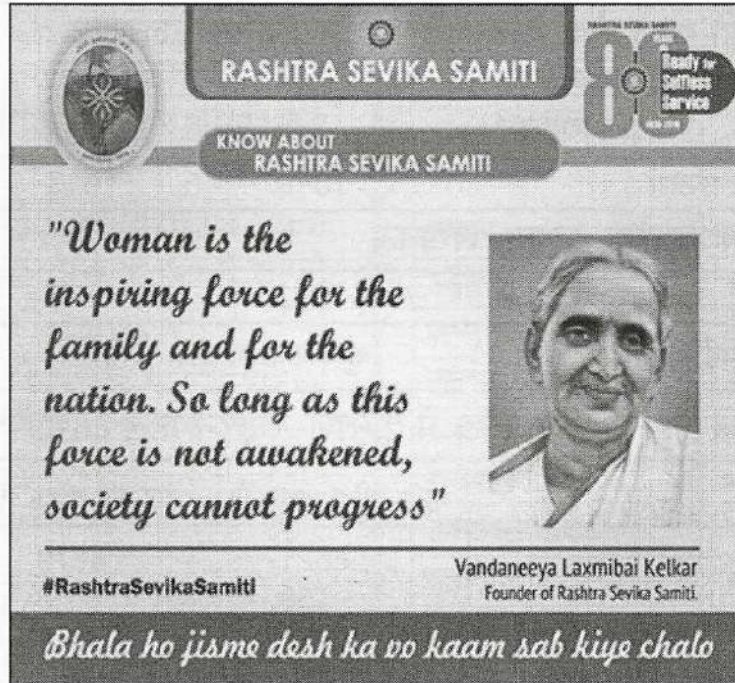
1945 में समिति का पहला राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। देश की स्वतन्त्रता एवं विभाजन से एक दिन पूर्व वे कराची, सिन्ध में थीं। उन्होंने सेविकाओं से हर परिस्थिति का मुकाबला करने और अपनी पवित्रता बनाये रखने को कहा। उन्होंने हिन्दू परिवारों के सुरक्षित भारत पहुँचने के प्रबन्ध भी किये।

साहसी वृत्ति : अगस्त 1947 का समय था। प्रिय मातृभूमि का विभाजन होने वाला था। मौसीजी को सिंध प्रांत की सेविका जेठी देवानी का पत्र आया कि सेविकाएँ सिंध प्रांत छोड़ने से पहले मौसीजी के दर्शन और मार्गदर्शन चाहती है। इससे हमारा दुःख हल्का हो जायेगा। हम यह भी चाहते हैं कि आप हमें श्रद्धापूर्वक कर्तव्यपालन करने की प्रतिज्ञा दें। देश में भयावह वातावरण होते हुए भी मौसीजी ने सिंध जाने का साहसी निर्णय लिया और 13 अगस्त 1947 को

साथी कार्यकर्ता वेणुताई को साथ लेकर हवाई जहाज से बम्बई से करांची गयी। हवाई जहाज में दूसरी कोई महिला नहीं थी। श्री जयप्रकाश नारायणजी और पूना के श्री. देव थे वे अहमदाबाद उतर गये। अब हवाई जहाज में थी ये दो महिलाएँ और बाकर सारे मुस्लिम, जो घोषणाएँ दे रहे थे — **लड़के लिया पाकिस्तान, हँस के लेंगे हिन्दुस्तान।** करांची तक यही दौर चलता रहा। करांची में दामाद श्री चोलकर ने आकर गन्तव्य स्थान पर पहुँचाया।

दूसरे दिन 14 अगस्त को करांची में एक उत्सव संपन्न हुआ। एक घर के छत पर 1200 सेविकाएँ एकत्रित हुईं। गंभीर वातावरण में वं. मौसीजी ने प्रतिज्ञा का उच्चारण किया, सेविकाओं ने दृढ़ता पूर्वक उसका अनुकरण किया। मन की संकल्पशक्ति को आवाहन करने वाली प्रतिज्ञा ने दुःखी सेविकाओं को समाधान मिला। अन्त में

मौसीजी ने कहा, 'धैर्यशाली बनो, अपने शील का रक्षण करो, संगठन पर विश्वास रखो और अपनी मातृ भूमि की सेवा का व्रत जारी रखो यह अपनी कसौटी का क्षण है।' मौसीजी से पूछा गया — हमारी इज्जत खतरे में है। हम क्या करें? कहाँ जाएँ? मौसी जी ने आश्वासन दिया — 'आपके भारत आने पर आपकी सभी समस्याओं का समाधान किया जायेगा।' अनेक परिवार भारत आये। उनके रहने का प्रबंध मुंबई के परिवारों में पूरी गोपनीयता रखते हुए किया गया।





भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन
1 अप्रैल 2019 से 31 मई 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह अप्रैल 2019 में लाभान्वित रोगी	माह मई 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल लाभान्वित रोगी
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	63	14	77
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	188	83	271
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	101	69	170
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	33	61	94
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	00	00	00
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	22	18	40
कुल लाभान्वित रोगी			407	245	652

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	561	577	1138
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	457	436	893
कुल लाभान्वित रोगी संख्या			1018	1013	2031

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	302	345	647
----	-------------	--------------------	-----	-----	-----

1 अप्रैल 2019 से 31 मई 2019 तक कुल लाभान्वित रोगी सं. 3330

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह अप्रैल 2019 में	माह मई 2019 में	योग सत्र 19-20
1.	उत्तर प्रदेश	5621	5679	11300
2.	उत्तराखण्ड	58	56	114
3.	बिहार	4077	3874	7951
4.	झारखण्ड	552	672	1224
5.	उड़ीसा	58	82	140
6.	मध्य प्रदेश	88	250	338
7.	छत्तीसगढ़	20	35	55
8.	राजस्थान/गुजरात	00	00	00
9.	महाराष्ट्र	00	00	00
10.	नेपाल	51	70	121
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	00	00	00
12.	पश्चिम बंगाल	59	123	182
13.	अन्य प्रान्त	01	124	125
योग		10585	10965	21550

अन्त्योदय हेल्थ मिशन, नेत्र कुम्भ चिकित्सालय, सी-136, निराला नगर, लखनऊ
1 अप्रैल 2019 से 31 मई 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

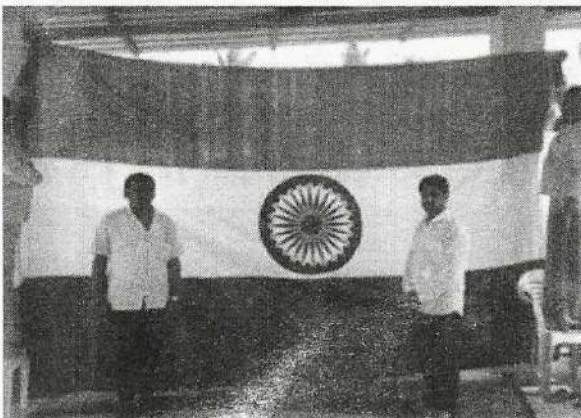
	माह अप्रैल 2019 में	माह मई 2019 में	योग सत्र 19-20
नेत्र परीक्षण	265	324	589
चश्मा वितरण	154	191	345

घर बेचकर बनाया “बेजोड़” तिरंगा

‘बेजोड़’ यानि इस तिरंगे में कोई जोड़ नहीं है। हैदराबाद के रहने वाले व पेशे से बुनकर आर. सत्यनारायण ने यह कमाल करके दिखाया है। उनका एक सपना था, जिसे पूरा करने की ललक में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। सत्यनारायण का सपना था कि भारत का ‘राष्ट्रीय ध्वज’ बिना सिलाई के इस तरह से तैयार करें कि उसमें कोई जोड़ ना हो। एक ऐसा तिरंगा जो दुनिया में उदाहरण बन सके, देशभक्ति का परिचय दे सके।

ऐसा तिरंगा बनाने का विचार उन्हें एक शॉर्ट फिल्म ‘लिटिल इंडियंस’ को देखकर आया। इस सपने को पूरा करने की चाहत में उन्हें घर से बेघर होना पड़ा। सत्यनारायण ने जिस तिरंगे का सपना देखा था, वह 812 फीट के झंडे के रूप में सामने आया। इस तिरंगे को बनाने के लिए उन्हें 6 लाख रुपए की ज़रूरत थी जो कमजोर आर्थिक हालात के कारण लगभग नामुमकिन था। कोई उपाय न सूझता देख उन्होंने अपना घर ही बेच दिया। इसके 4 साल के लंबे इंतजार के बाद उन्हें अपने काम में सफलता मिली।

देश के हर नागरिक के मन में तिरंगे के लिए बहुत मान-सम्मान है, लेकिन अगर कोई उसे कपड़े के एक ही पीस पर तैयार करने की ठान ले और इसके लिए अपना घर-बार तक दांव पर लगा दे तो वह व्यक्ति आम नागरिक से खास बन जाता है।



एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन
सफदरजंग, नई दिल्ली में
प्रान्तशः ठहरने वाले लाभार्थियों
की संख्या

1 अप्रैल 2019 से 31 मई 2019 तक

भारतीय राज्य/देश	अप्रैल 2019	मई 2019	कुल योग 2019-20
बिहार	422	392	814
उत्तर प्रदेश	336	358	694
मध्य प्रदेश	82	73	155
झारखण्ड	67	39	106
राजस्थान	51	48	99
पश्चिम बंगाल	53	38	91
उत्तराखण्ड	40	38	78
हरियाणा	33	35	68
नेपाल	32	37	69
उड़ीसा	04	12	16
जम्मू और कश्मीर	12	29	41
छत्तीसगढ़	08	09	17
असम	00	07	07
गुजरात	02	09	11
हिमाचल प्रदेश	05	00	05
महाराष्ट्र	04	02	06
दिल्ली	06	10	16
त्रिपुरा	02	02	04
पंजाब	00	03	03
मनीपुर	00	00	00
अरुणाचल प्रदेश	00	05	05
आंध्र प्रदेश	00	00	00
चंडीगढ़	00	00	00
केरल	04	00	04
सिक्किम	00	00	00
तेलंगाना	00	00	00
बांग्लादेश	00	00	00
तमिलनाडू	00	00	00
अफगानिस्तान	00	00	00
कुल	1163	1146	2309



कैंसर से बचने के लिए आवश्यक आहार

□ जितेन्द्र गुप्ता

एक हालिया अध्ययन के मुताबिक एक अस्वस्थकर डाइट आपमें किसी न किसी प्रकार के कैंसर के खतरे को विकसित कर सकती है। हालांकि ऐसी कोई डाइट नहीं है, जो आपको कैंसर से बचाया उसे रोक सके लेकिन कुछ फूड कैंसर के विकसित होने के खतरे को कम जरूर कर सकते हैं।

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जेएनसीआ कैंसर स्पेक्ट्रम में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन के मुताबिक एक अस्वस्थकर डाइट आपमें किसी न किसी प्रकार के कैंसर के खतरे को विकसित कर सकती है। हालांकि ऐसी कोई डाइट नहीं है, जो आपको कैंसर से बचाया उसे रोक सके लेकिन कुछ फूड कैंसर के विकसित होने के खतरे को कम जरूर कर सकते हैं। कैरोटीनॉयड, पॉलीफेनोल्स और एलियम यौगिक, एंटी ऑक्सिडेंट, विटामिन ए, डी, के, और बी जरूरी फाइटोन्यूट्रिएंट, कैल्शियम और खनिज वाले पौधे से उत्पन्न फूड संभावित रूप से आपकी इम्यूनैटी को बढ़ाने, आपको स्वस्थ रखने व कैंसर के खतरे को कम करने में मदद कर सकते हैं।

पर्यावरण और जेनेटिक जैसे कुछ कारकों पर तो आपका बस नहीं है लेकिन धूम्रपान, शराब का सेवन, भारी वजन और बिगड़ी जीवनशैली सहित कुछ चीजों को बदलना आपके हाथ में है। ध्यान रखें कि ये कारक कैंसर का 70 फीसदी जोखिम बढ़ाते हैं। **एक स्वस्थ डाइट अपनाना कैंसर के जोखिम को कम करने में एक अहम भूमिका निभाता है।** इसलिए हम आपको ऐसे 5 फूड के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्हें आप अपनी थाली का हिस्सा बनाकर कैंसर के खतरे को कम कर सकते हैं।

अपनी डाइट में बहुत सी सब्जियां शामिल करें **ब्रोकोली, गाजर, टमाटर सहित हरी पत्तेदार सब्जियों को अपनी डाइट में जरूर शामिल करें।** इन सब्जियों में कैंसर रोधी गुण होते हैं, जो आपके शरीर के भीतर कैंसरकारी तत्वों से लड़ने में मदद करते हैं।

पर्याप्त मात्रा में फल खाए :

जामुन, नींबू, संतरे, अंगूर आदि सहित फलों का अत्यधिक मात्रा में सेवन करें। इन फलों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो कैंसर के खतरे के कम करने वाले कारकों से जुड़े हुए हैं।

साबुत अनाज का प्रयोग करें :

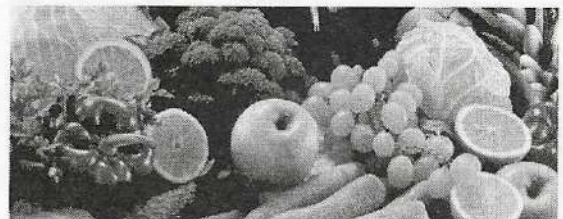
'जर्नल जामा ओंकोलॉजी' में प्रकाशित एक अध्ययन के मुताबिक साबुत अनाज का सेवन कैंसर के खतरे को कम करने के साथ जुड़ा हुआ है।

डेयरी उत्पादों का चयन करें :

'द एनल्स ऑफ ऑन्कोलॉजी' में प्रकाशित एक अध्ययन के मुताबिक, कैल्शियम, विटामिन डी और लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया वाला दूध व दही सहित डेयरी उत्पाद कोलोरेक्टल कैंसर के खतरे को कम कर सकते हैं।

रेड मीट का अत्यधिक सेवन खतरनाक :

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, प्रोसेस्ड रेड मीट कैंसरकारी तत्वों के एक समूह का हिस्सा है इसलिए जहां तक संभव हो इसका इस्तेमाल खाने में कम से कम करें।





भक्त कन्नप्पा गुरुकुलम् गोकावरम्

सेवा भारती के भक्त कन्नप्पा गुरुकुलम् ने आंध्र प्रदेश की उपेक्षित चेन्चु वनवासी जाति के लिए शिक्षा के साथ रोजगार और व्यवसाय के द्वार खोलने की दिशा में एक कदम बढ़ाया है।

चेन्चु शहरी लोगों से दूर ही रहते हैं। उनकी उपजीविका वनोत्पादनों पर निर्भर है। उन्हें वनोपज का अत्यन्त अल्प मूल्य मिलता है इससे उनकी उपजीविका सही तरीके से चलना असंभव है। उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए उनकी आय बढ़ाना आवश्यक है यह ध्यान में रखकर सेवा भारती ने चेन्चु विद्यार्थियों के लिए रोजगार प्रशिक्षण की व्यवस्था की।

चेन्चु जाति के 8 गुडम् (बेड़ों) से 20 विद्यार्थी लेकर इस छात्रावास का आरंभ किया गया। उपलब्ध छोटी जगह में छात्रावास शुरू हुआ। 2001-02 को दानवीर श्री जी. पुल्ला रेड्डी ने गोकावरम् गाँव में छात्रावास के लिए 3 एकड़ जगह दान दी। 18 लाख रुपये खर्च कर

यहाँ छात्रावास के लिए इमारत बनाई गई। 2002 में छात्रावास नई जगह में स्थानांतरित हुआ।

इस छात्रावास में बच्चों को चार वर्ष की आयु के बाद प्रवेश दिया जाता है। इस कारण बच्चे नए वातावरण में ढल जाते हैं। छात्रावास में विद्यार्थियों को चौथी कक्षा के बाद बढ़ई, इलेक्ट्रिक, बुक बाईंडिंग, मोटर रिवाइंडिंग के साथ धनुर्विद्या का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। (धनुष-बाण चलाना चेन्चु जाति का पारंपरिक खेल है) उल्लेखनीय बात यह है कि ये विद्यार्थी रोजगार



प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद अपने व्यवसाय में निपुण हो जाते हैं।

चार वर्ष के बालक को उसके परिवार से दूर, छात्रावास में रखना सामान्य परिपेक्ष में अटपटा लगता है। लेकिन चेन्चु की जीवनशैली को देखते हुए यह आवश्यक है। ये लोग वनोपज एकत्र करने के लिए अपने परिवार के साथ जंगलों में जाते हैं। वहाँ अस्थाई कुटिया बनाकर दस-पंद्रह दिन रहते हैं। जमा वन उत्पादन लेकर अपने गुडम् (बेड़े) पर आते हैं और शहर जाकर उसे बेचते हैं। यही क्रम चलता रहता है। इस जाति में बाल विवाह की प्रथा

है। बच्चे 14-15 वर्ष के होते ही विवाह कर अलग घर बसा लेते हैं। इस कारण जब ये लोग जंगल में जाते हैं तब गुडम् (बेड़ों) पर छोटे बच्चों का ध्यान रखने के लिए कोई नहीं रहता।

चल रुग्णालय :

आर्थिक और भौगोलिक मर्यादाओं के कारण ये लोग उपचार के लिए शहर के दवाखानों में नहीं

जाते। इनके लिए सेवा भारती ने एक चल रुग्णालय (मोबाईल डिस्पेंसरी) की व्यवस्था की है। यह चल रुग्णालय नाल्लमल्ला वन क्षेत्र के सब चेन्चु गुडम् (बेड़ों) को हर माह में तीन बार मिलकर रुग्णों का उपचार करता है।

गुरुकुलम् चेन्चु जनजाति के बच्चों को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने में सफल रहा है।

संपर्क :

भक्त कन्नप्पा गुरुकुलम्, गोकावरम् कोटापल्ली मंडल, जिला:कर्नूल आंध्र प्रदेश, (भारत) 518422



देवर्षि नारद का कार्य सकारात्मकता को बढ़ाना था

□ भाग्येश झा

नारद जयंती के उपलक्ष्य में पत्रकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता भाग्येश झा द्वारा साहित्यकार तथा पूर्व सुचना आयुक्त, गुजरात, ने कहा कि नारद का कार्य सकारात्मक बातों द्वारा **Positive Journalism** को बाहर लाना था। यह काम बिना किसी भेदभाव के करने वाला ही नारद का अनुयायी हो सकता है। वि.सं.कें. द्वारा आज जिन 6 महानुभावों का सम्मान किया गया, उनका चयन बहुत ही बुद्धिमतापूर्वक किया गया है।

पत्रकारत्व की आज की जो आवश्यकता है, उनका समावेश इन 6 महानुभावों में हो जाता है। उन्होंने कहा कि मैं तो नारद के साथ साथ कालिदास की बात भी कहूँगा, जिन्होंने मेघदूत में बादलों के माध्यम से संदेश भेजने की बात कही है। आजकल कवि कालिदास का अध्ययन करके Cloud Computing कर रहे हैं।

भविष्य का पत्रकारत्व विषय पर हॉवर्ड में एक संशोधन हुआ और Wordsmith नामक एक ऐप तैयार किया गया। उनका कहना है कि भूकंप जैसे समाचार की रिपोर्ट आप रोबोट को दें तो वह 3000 शब्दों की रिपोर्ट तैयार कर देगा। पत्रकारों को तीन बातों से सावधानी रखने की जरूरत है।

पत्रकारों की प्रतिदिन परीक्षा होती है तथा रोज उसका परिणाम भी होता है। दूसरा अल्पजीवी समाचारों का युग है। इसीलिए Slow Journalism की भी आवश्यकता पड़ेगी। मुझे ऐसा लगता है कि पत्रकार समाज को दिशा देने वाले लोग हैं। पत्रकार कभी इतिहास नहीं लिखता, लेकिन पत्रकारों के बिना इतिहास लिखा भी नहीं जा सकता।

उन्होंने कहा कि Creative Writing एक बहुत बड़ा Challenge है और हेड लाइन बनाना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। आज जब लोगों के पास समय की कमी है, तब क्या करना उसका ज्ञान देने वाला भी

पत्रकार है। पत्रकार को हमेशा जागृत रहना आवश्यक है, पत्रकार जितना सतर्क होगा उतना ही समाज सतर्क रहेगा और समाज सतर्क रहेगा तो सरकार भी बराबर ही चलेगी।



कार्यक्रम के अध्यक्ष जयंतीभाई भाड़ेसिया क्षेत्र संघचालक, पश्चिम क्षेत्र, (रा.स्व.संघ) ने कहा कि आचार, नैतिकता तथा देश प्रेम पत्रकारत्व की नींव में होना चाहिये।

नारद जयंती के अवसर पर पत्रकार सम्मान समारोह में श्री जयवंतभाई पंडया (Print Media) श्री विवेक कुमार भट्ट (Digital Media) श्री मनोजभाई मेहता (Web Media) श्री मौलिन मुंशी (Radio Journalism), श्री सुदर्शन उपाध्याय, गुजरात समाचार श्री हर्षदभाई याज्ञिक, साधना साप्ताहिक (विशेष सम्मान) को सम्मानित किया गया।



खुद की पहचान

□ रेखा राय

एक बच्चा जब 13 साल का हुआ तो उसके पिता ने उसे एक पुराना कपड़ा देकर उसकी कीमत पूछी। बच्चा बोला 100 रुपये। तो पिता ने कहा कि इसे बेचकर दो सौ रुपये लेकर आओ। बच्चे ने उस कपड़े को अच्छे से साफ़ कर धोया और अच्छे से उस कपड़े को फोल्ड लगाकर रख दिया। अगले दिन उसे लेकर वह रेलवे स्टेशन गया, जहां कई घंटों की मेहनत के बाद वह कपड़ा दो सौ रुपये में बिका।

कुछ दिन बाद उसके पिता ने उसे वैसा ही दूसरा कपड़ा दिया और उसे 500 रु में बेचने को कहा। इस बार बच्चे ने अपने एक पेंटर दोस्त की मदद से उस कपड़े पर सुन्दर चित्र बना कर रंगवा दिया और एक गुलज़ार बाजार में बेचने के लिए पहुंच गया। एक व्यक्ति ने वह कपड़ा 500 रु में खरीदा और उसे 100 रु ईनाम भी दिया। जब बच्चा वापस आया तो उसके पिता ने फिर एक कपड़ा हाथ में दे दिया और उसे दो हजार रुपये में बेचने को कहा। इस बार बच्चे को पता था कि इस कपड़े की इतनी ज्यादा कीमत कैसे मिल सकती है। उसके शहर में मूवी की शूटिंग के लिए एक नामी कलाकार आई थी। बच्चा उस कलाकार के पास पहुंचा और उसी कपड़े पर उनके ऑटोग्राफ ले लिए। ऑटोग्राफ लेने के बाद बच्चे ने उसी कपड़े की बोली लगाई। बोली दो हजार से शुरू हुई और एक व्यापारी ने वह कपड़ा 12000 रु में ले लिया।

रकम लेकर जब बच्चा घर पहुंचा तो खुशी से पिता की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने बेटे से पूछा कि इतने दिनों से कपड़े बेचते हुए तुमने क्या सीखा? बच्चा बोला – पहले खुद को समझो, खुद को पहचानो। फिर पूरी लगन से मन्ज़िल

की और बढ़ो क्योंकि जहां चाह होती है, राह अपने आप निकल आती है। 'पिता बोले कि तुम बिलकुल सही हो, मगर मेरा ध्येय तुमको यह समझाना था कि कपड़ा मैला होने पर इसकी कीमत बढ़ाने के लिए उसे धोकर साफ़ करना पड़ा, फिर और ज्यादा कीमत मिली जब उस पर एक पेंटर ने उसे अच्छे से रंग दिया और उससे भी ज्यादा कीमत तब मिली जब एक नामी कलाकार ने उस पर अपने नाम की मोहर लगा दी। तो विचार करें जब इंसान उस निर्जीव कपड़े को अपने हिसाब से उसकी कीमत बढ़ा सकता है। तो फिर वो मालिक जिसने हम जीवों को बनाया है क्या वो हमारी कीमत कम होने देगा? जीवात्मा भी यहां आकर मैली हो जाती है लेकिन सतगुरु हम मैली जीवात्माओं को पहले साफ़ और स्वच्छ करते हैं, जिससे परमात्मा की नज़र में हम जीवात्माओं की कीमत थोड़ी बढ़ जाती है। फिर सतगुरु हम जीवात्माओं को अपनी रहनी के रंग में रंग देते हैं, फिर कीमत और ज्यादा बढ़ जाती है। और फिर सतगुरु हम पर अपने नाम की मोहर लगा देते हैं फिर तो इंसान अपनी कीमत का अंदाज़ा ही नहीं लगा सकता।

अफ़सोस इतना कीमती इंसान अपने आप को कौड़ियों के दाम खर्च करते जा रहा है, उसे अपने आप की ही पहचान नहीं, उसे अपने ऊपर लगी सतगुरु के नाम रूपी कृपा और उस अपार दया की कद्र नहीं, क्योंकि अगर कद्र होती तो उसके हुकुम में रहकर भजन, बन्दगी, सेवा समर्पण के कामों से पूरा-पूरा समय देकर अपने इंसानी जामे का मकसद और उसकी कीमत भी जरूर समझते।

अशोक राय

174/127 आदम साहिब स्ट्रीट
रायपुरम मार्केट चेन्नई



सेवाभारती द्वारा सीता नवमी पर सर्वजातीय सामूहिक विवाह का आयोजन

जयपुर समाज की भिन्न-भिन्न 11 बिरादरियों के 41 वर-वधु का सामूहिक विवाह संस्कार एक ही पण्डाल में पूज्य संत वृन्दों के आशीष व सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। वर-वधु को पूज्य संत श्री अकिंचन महाराज, संत श्री मुन्नादास जी, संत श्री हरिशंकरदास एवं संत श्री मनीषदास जी ने आशीर्वाद प्रदान किया। नव दम्पति में पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित हो, इस हेतु प्रत्येक वर एवं वधू को तुलसी पौधे प्रदान किए गए।

सेवा भारती द्वारा सर्वजातीय विवाह की इस यात्रा का शुभारम्भ 10 वर्ष पूर्व समाज में सेवा, समरसता व अनावश्यक व्यय से बचने के उद्देश्य से राजस्थान के भवानी मण्डी से किया गया था। अब

तक पूरे राजस्थान के 13 जिलों के 25 स्थानों के 1897 जोड़े विवाह के पवित्र बन्धन में बंध चुके हैं।

इस पहल से लोगों को खर्चीले वैवाहिक आयोजन से राहत मिली है। बहुत ही सामान्य पंजीयन शुल्क लेकर विदाई के पश्चात गृहस्थी के लिए आवश्यक सभी सामग्री समाज के सहयोग से नवदम्पति को भेंट की जाती है। सामाजिक न्याय विभाग का प्रमाणीकरण भी दिलाया जाता है। समाज के सभी वर्गों की उपस्थिति में सम्मानपूर्वक वैवाहिक अनुष्ठान पूर्ण होकर उनके जीवन की मधुर स्मृति बनता है। इस वर्ष में अभी तक विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में 100 से अधिक जोड़े वैवाहिक बंधन में बंध चुके हैं।



सर्वजातीय सामूहिक विवाह





हमारे प्रयासों से राष्ट्र के परम वैभव का स्वप्न साकार होगा

□ डॉ. अशोक कुकडे

पद्मभूषण डॉ. अशोक कुकडे जी ने कहा कि समाज जीवन के हर क्षेत्र में स्वयंसेवक को संगठन का कार्य करना आवश्यक है, यह मंत्र आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार जी ने दिया था। डॉ. हेडगेवार के संगठन शास्त्र का, उनके संघ संस्कारों को अंगीकार करने से ही विवेकानंद रुग्णालय का यह कार्य संभव हुआ। मैंने भले ही वैद्यकीय शिक्षा प्राप्त की है, परंतु वास्तव में एक स्वयंसेवक के नाते संगठित होने का अनुभव बचपन से ही मिला है। संगठित रूप से श्रम किया जाए तो समाज भी हमारा साथ देता है और संकटों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति भी प्राप्त होती है। आज का यह दिन इस संगठन वृत्ति का परिणाम है।

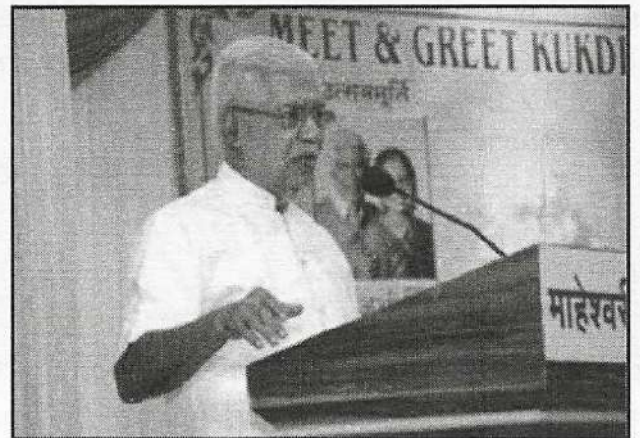
महाराष्ट्र के लातूर स्थित विवेकानंद रुग्णालय के संस्थापक और पश्चिम क्षेत्र के पूर्व संघचालक डॉ. अशोक कुकडे को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है तथा डॉ. ज्योत्सना कुकडे को एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय ने डी.लिट. की उपाधि प्रदान की है। केशव सृष्टी संस्था ने दोनों के सम्मान में मुंबई के माहेश्वरी भवन में, शनिवार 11 मई को समारोह आयोजित किया था। वनबंधु परिषद के पूर्व अध्यक्ष रामेश्वर लाल काबरा तथा बापूजी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। समारोह के अध्यक्ष राजेंद्र बारवाले जी, कार्यक्रम के संयोजक विष्णुदास जी मंच पर उपस्थित रहे।

डॉ. कुकडे ने कहा कि विवेकानंद रुग्णालय जिस कालखंड में स्थापित हुआ, वह संघ के लिये अत्यंत प्रतिकूल कालखंड था। हम सब डॉ.मूलतः स्वयंसेवक थे। लातूर में हम शाखा में जाते थे। हमारे प्रयत्न मिटाने के अनेक प्रयास किये गए। पहले 15 साल विवेकानंद रुग्णालय के लिये विशेष प्रतिकूल थे। आज का काल अनुकूल है। विवेकानंद रुग्णालय का काम और बढ़ाना आवश्यक है। संघ स्वयंसेवक जिस क्षेत्र में भी जाए, उस क्षेत्र में राजदूत का काम करना चाहिये, श्रीगुरु जी की यह सीख आज भी स्मरण है। राष्ट्र को परम वैभव तक

ले जाने का संघ का स्वप्न हम सब के एकत्रित प्रयासों से पूर्ण होगा। आज इस गौरव समारोह की वजह से 80 साल की उम्र में भी ऊर्जा मिलती है तथा काम करने की प्रेरणा मिलती है।

साक्षात् परमेश्वर दर्शन का अनुभव

डॉ. ज्योत्सना कुकडे ने कहा कि वास्तव में हम दोनों को प्राप्त हुआ सम्मान मुझे ही मिला है, ऐसी हर लातूरवासी की भावना है। यह देखकर मुझे उनमें परमेश्वर दर्शन की अनुभूति मिलती है। मेरी डी.लिट उपाधि का संबंध केवल वैद्यकीय शिक्षा से संबंधित नहीं, बल्कि लातूर निवासियों से जुड़ा है। विवेकानंद रुग्णालय का परिवार उन लोगों से ही समृद्धि हुआ है। हमारी डॉक्टरी की पढ़ाईपीछे चली गई और हम लातूरवासियों के चाचा-चाची बन गए। इसका मुझे अभिमान है

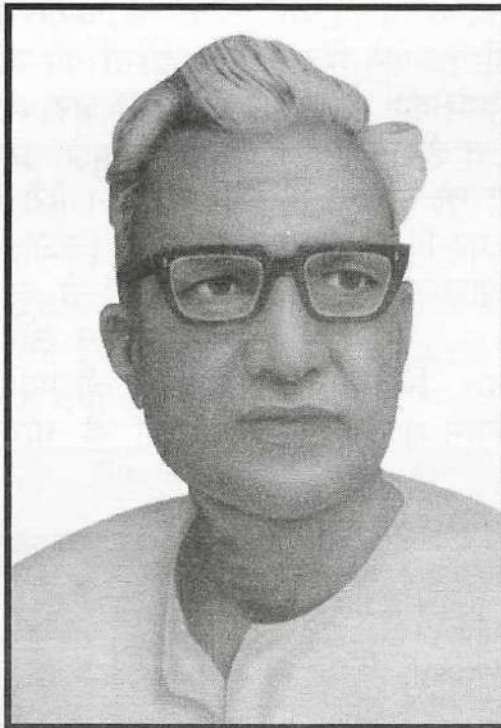




जन्मशताब्दी पर – स्मृतियों के झरोखे से – भाऊराव जी के थोड़े शब्द बड़ी बात

□ डॉ. गुज्जर मल वर्मा

1978 में दिल्ली में शिशु संगम का आयोजन हुआ था। विद्या भारती का निर्माण 1977 में ही हुआ था अतः शिशु संगम की पूरी रूपरेखा बनाने में भाऊराव हमारा मार्गदर्शन किया करते थे। मैं उनके साथ बैठकर उनकी इच्छानुसार योजना की विस्तृत दे रहा था। श्री कृष्ण चंद्र गांधी पर आयोजन की पूरी जिम्मेदारी थी एवं स्व. सत्यपाल गुलाटी उनके प्रमुख सहायक थे। ये दोनों महानुभाव भी इस बातचीत में सम्मिलित थे। पूरी जानकारी प्राप्त करने के उपरांत मा. भाऊराव जी ने कहा, देखो गुज्जर मल! मैं आप तीनों में से किसी से भी कुछ पूछू तो मुझे यह सुनने को न मिले कि अमुक बात आप अन्य दो से पूछ कर बतायें।



श्रद्धेय भाऊराव देवरस बहुत थोड़े शब्दों में बहुत बड़ी बात कह डालते थे। प्रमुख कार्यकर्ताओं का समायोजन कितना आवश्यक है यह बात तुरंत समझ में आ गई। बैठक की बातचीत का अवलोकन करने पर ध्यान में आया कि अनेक बार भाऊराव जी के प्रश्न पूछने पर मैं अन्य बन्धुओं से जानकारी देने के लिए कहता था और हमारी इस संगठनात्मक कमी को वे ताड़ गए थे। पूरे आयोजन में यह वाक्य मेरे लिए मार्गदर्शन बिन्दु बन गया। अब तो जीवनभर मैं इसका ध्यान रखता हूँ।

कहीं पर तो सीमा बांधनी है

बात 1982 की है। मैं सरकारी सेवा से अवकाश लेने की सोच रहा था। अपने सेवाकाल में वृद्धि मुझे स्वीकार करनी चाहिये या नहीं यह प्रश्न

मेरे सामने उस समय आ खड़ा हुआ जब मेरे निदेशक ने मुझे सरकार के इस प्रस्ताव की जानकारी दी कि मुझे दो वर्ष के लिए और कार्यरत रहने के लिए कहा जाने वाला है। मा. भाऊराव जी से मैंने बात की। उन्होंने एक ही वाक्य में मेरी उलझन सुलझा दी, कहीं पर तो सीमा बांधनी ही होगी।

तोड़ना नहीं, जोड़ना सीखो

विद्या भारती प्रदीपिका की कुछ प्रतियों को प्लास्टिक की रस्सी से बांध कर उन्हें दिखाने के लिए मैं भाऊराव के पास ले गया। उन्होंने बंडल को खोलने के लिए मुझे कहा। गांठ खुल नहीं रही थी। मैं इधर उधर ब्लेड या चाकू ढूंढ रहा था। भाऊराव जी ताड़ गए। कहने लगे, भजोड़ना सीखना है हमें। कम से कम जुड़े को तो काटने की मत सोचो। मेरे लिए तो यह

जीवन मंत्र बन गया।

गुण देखो अवगुण नहीं

विद्या भारती के मंत्री – पद का उत्तरदायित्व निभाने के समय मार्गदर्शन के लिए मुझे भाऊराव जी के पास जाना ही पड़ता था 1990 की बात है। एक प्रान्त में किसी कार्यकर्ता के स्वभाव के कारण वहां के कुछ वरिष्ठ बंधु नाराज थे। मैंने भाऊराव जी से बात की। मेरा मत था कि उस कार्यकर्ता को दूसरा कोई कार्य दे दिया जाए। भाऊराव ने कहा, सब प्रकार से आदर्श व्यक्ति ढूंढोगे तो देखते ही रहोगे। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ कमियां होती हैं, गुणों का आधार लेकर कार्यकर्ताओं को बनाओ।



विद्या भारती द्वारा मेधावी छात्र पुरस्कार प्रदान

गान्तोक, 19 मई विद्या भारती सिक्किम प्रान्तले आज भाऊराव देवरस छात्रा पुरस्कार अलङ्करण समारोह आयोजन गन्यो। यहाँ को प्रेस क्लब अफ् सिक्किमको सभागारमा सम्पन्न कार्यक्रममा विद्यार्थीहरूलाई छात्रावृत्ति प्रदान गरिएको थियो।। सिक्किम, दार्जीलिङ अनि कालेबुङका कूल 17 विद्यार्थीलाई उक्त छात्रावृत्ति प्रदान गरियो। कार्यक्रममा मुख्य अतिथिका रूपमा संस्थाका सिक्किम प्रान्त अध्यक्ष छुलटिम भोटिया रहेका थिए। यसरी नै विचिष्ट अतिथिहरूमा सामाजिक कार्यकर्ता खेमराज दाहाल, प्रमोद

अगरवाल, विजय कुमार धिताल आदि रहेका थिए। दीप प्रज्वलनका साथ आरम्भ गरिएको कार्यक्रममा संस्थाका प्रतिनिधिहरूले वक्तव्य राखेका थिए। विद्यार्थीलाई यसरी छात्रावृत्ति प्रदान गरिसकेको छ। प्राथमिक तहदेखि बाहोँ श्रेणीसम्मका कूल 17 विद्यार्थीहरूलाई संस्थाले छात्रावृत्ति क्रमैले 4 हजार अति 6 हजार रूपियाँ प्रदान गरेको छ। विगत वर्षको परीक्षामा नेपाली विषयमा राज्यमा नै सर्वाधिक अम ल्याउने प्रणिता चामालाई कार्यक्रममा संस्थाले आज वियोष सम्मान पनि जनायो।





जनसेवा/नरसेवा

□ रमेश बाबू शर्मा "व्यस्त"
सी-61, सूरजमल विहार, दिल्ली

जो नर जनसेवा करे, मिले पुण्य भरपूर।
बढ़े प्रतिष्ठा लोक में, व्यापे कीर्ति सुदूर।।

फलदायी होती सदा, जनसेवा निष्काम।
परिकर को प्रेरित करे, चर्चा हो अविराम।।

जनसेवा के मर्म की, महिमा अपरम्पार।
निर्विकार हो जो करें, पावे मान दुलार।।

राष्ट्र भक्त करते सदा, जनसेवा निःस्वार्थ।
वे ही करते जगत में, सचमुच ही परमार्थ।।

जनसेवा के मूल में, समरसता सद्भाव।
बढ़ चढ़ कर विस्तीर्ण हों, दूर करें दुर्भाव।।

निस्पृह हो सद्वृत्ति से, बढ़ें सृजन की ओर।
जनसेवा कर हृदय में, उठती हर्ष हिलोर।।

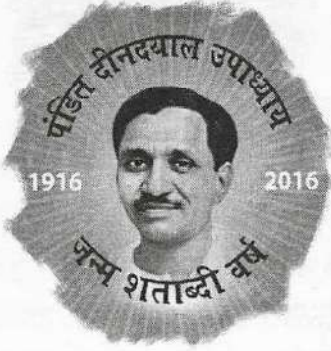
नरसेवा जग मान्य है, प्रभु सेवा का रूप।
निबलों की सेवा स्वयम्, ब्रह्म-भक्ति अनुरूप।।

अन्तर्मन से जो रखे, नर सेवा का चाव।
व्यस्त उसी नर श्रेष्ठ का, जग पर पड़े प्रभाव।।





पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र



ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

अनुरोध



जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाऊराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Bhaorao Deoras Seva Nyas A/c No. 30448433657 State Bank of India, Daliganj (Niralanagar) Lucknow (IFSC Code: SBIN0003813) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

— राजेश (संयोजक)

मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।



शहीद का जाना

□ डॉ० राकेश अग्रवाल

पूरा देश शोक में डूबा
कैसे गीत सुनाऊं मैं
वीर शहीदों के घर जाकर
ढाँढस कौन बंधाऊं मैं
बेटे को मालूम नहीं है
बापू यों क्यों लेटा है
पत्नी मांग पोछ के सोचे
भाग्य किसे दिखलाऊं मैं
बढ़ती बिटिया के तो आंसू
कैसे झर झर बहते हैं
शादी के वो लायक हुई है
किससे ब्याह रचाऊं मैं।



कार्यकारी निदेशक एटीएमएस कॉलिज
हिमदीप, हापुड़ - 245101
मो०- 9837183138
Email - kamleshakeshim@gmail.com

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र



सेवा संवाद

सम्पादकीय कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

दूरभाष : 0522-4001837, 2789406 मोबाइल : 9793120738

Email : sewasamwad@gmail.com

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,

'सेवा संवाद'

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक/
जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/हैं। इस निमित्त वार्षिक शुल्क 200/-
अथवा आजीवन शुल्क 2000/- रुपये 'सेवा संवाद' के पक्ष में नकद/बैंक
ड्राफ्ट/चेक सं. दिनांक बैंक
..... द्वारा भेज रहा हूँ/रहे हैं। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की
रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह० आवेदक

हमारा पता है :

नाम :

पता :

.....

.....

जिला:

प्रदेश : पिन:

मोबाइल:

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक आफ इण्डिया,
निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102 (IFSC : BKID0006806)
में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।



गंगा की अविरलता जरूरी

□ डॉ० बृजेश कुमार श्रीवास्तव

जल पुरुष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि गंगा की अविरलता के लिए अब पूरे देश में जन-जागृति शुरू कर दी है। गंगा की अविरलता के लिए देश की नई सरकार एवं सांसदों से मिलजुल कर कार्य किया जाएगा। यदि इसके बाद भी कार्यवाही नहीं होती है, तो गंगा के लिए सत्याग्रह किया



जल पुरुष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि 22 मई 2007 से प्रो. जीडी अग्रवाल ने गंगा की अविरलता के लिए सत्याग्रह शुरू किया था, जो आज गंगा के लिए शहीद हो गये हैं। उनके सत्याग्रह को जारी रखने के लिए पूरे देश में जल विरादरी संगठन जन चेतना जारी रखेगी।

पत्रकारों से वार्ता करते हुए जल पुरुष राजेन्द्र

सिंह ने कहा कि गंगा की अविरलता जन-जागृति का यही नारा रहेगा कि कोई भी आए सरकार अबकी बार अविरल गंगा धार, यही है हमारी पुकार। उन्होंने कहा कि विभिन्न राज्यों के गंगा भक्तों ने संकल्प लिया कि गंगा की अविरलता के लिए काम करते रहेंगे। जब तक हमारी नई सरकार व संसद जीवनदायिनी, भारत की संस्कृति, सभ्यता एवं अध्यात्म को प्रवाह देने वाली गंगा के लिए, सदैव अविरल बनाने का प्लान नहीं बनाती।

तब तक चेतना जारी रहेगी, पूरे देश में गंगा के लिए जल बिरादरी संगठन गठित किए जा रहे हैं। इस मौके पर जल बिरादरी संगठन की अध्यक्ष बीना चौधरी, टिहरी से सुशील बहुगुणा, केरल से आये जार्ज स्टनिल, तमिलनाडु से सलवन, आंध्र प्रदेश से सत्या बुलशेटी, हरियाणा से देशराज, दिल्ली से जगदीश चौधरी, भोपाल सिंह चौधरी, सोमेश्वर, जगदम्बा देवी, विनोद चमोली आदि ने गंगा को अविरल और स्वच्छ रखने के अपने संकल्प को दोहराया और सब के सहयोग की अपेक्षा की।





भारत की जीवन दृष्टि एकात्म और सर्वांगीण है

□ डॉ० मनमोहन वैद्य

भारत की जीवनदृष्टि (View of Life) दुनिया में विशिष्ट (Unique) है, कारण उसका आधार आध्यात्मिकता (Spirituality) है। इसीलिए यह दृष्टि एकात्म है और सर्वांगीण भी है। इसी कारण भारत सत्य के अनेक रूप देखता है, उस तक पहुँचने के मार्ग विभिन्न होते हुए भी वे सभी समान हैं यह मानता है। इसी कारण वह अनेकता में एकता देखता है और विविधता में ऐक्य की प्रस्थापना कर सकता है। वह विविधता को भेद नहीं समझता। प्रत्येक व्यक्ति में, चराचर में एक ही आत्म-तत्व विद्यमान है, इसलिए हम सभी परस्पर जुड़े हुए हैं यह भारत मानता है। इस जुड़ाव की अनुभूति करना, जुड़ाव के विस्तार का परिघ बढ़ाते जाना और अपनेपन का विस्तार बढ़ाते हुए अपनेपन के भाव से दूसरों के लिए कुछ करना इसी को यहाँ धर्म कहा गया है। यह धर्म जो 'रिलिजन' से अलग है, वह सबको जोड़ता है, किसी को छोड़ता नहीं है। भारत की इस जीवनदृष्टि को दुनिया में 'हिन्दू जीवनदृष्टि' के नाम से जाना जाता रहा है, इसीलिए यह भारत के सभी लोगों की पहचान बन गयी है। फिर उनकी भाषा, जाति, प्रदेश या उपासना पंथ (रिलिजन) कोई भी हो, वे सब इस एकात्म और सर्वांगीण जीवनदृष्टि को अपना मानते हैं, इससे अपना रिश्ता जोड़ते हैं, इसलिए हिन्दू यह भारत में रहने वाले सब की पहचान बनी है। यह हिन्दू होना याने 'हिन्दुत्व' भारत के सभी को आपस में जोड़ता है, एकता का अहसास कराता है। संघ संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार ने भारत के

विभिन्न भाषा, जाति, उपासना पंथ और प्रदेश के लोगों में एकता का भाव जगाने के लिए इसी हिन्दुत्व को आधार बनाया और सबको इस हिन्दुत्व के आधार पर जोड़कर संगठित करने का कार्य प्रारम्भ किया।

परंतु अपने अपने राजनैतिक व निहित स्वार्थ के लिए जो लोग इस समाज को जाति, भाषा, प्रदेश या रिलिजन के नाम पर बँटा हुआ ही रखना चाहते थे, उन सभी ने इस 'हिन्दुत्व' को साम्प्रदायिक, प्रतिगामी, विभाजनकारी, अल्पसंख्य विरोधी आदि-आदि कहकर, हिन्दुत्व का और संघ का जोर शोर से विरोध करना शुरू किया। हिन्दुत्व के पुरोधे ऐसे स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती जैसे अनेक संत पुरुषों को भी यही सारे दूषण लगाकर इनके कार्यों को नकारना, विरोध करना शुरू हुआ।

परंतु हिन्दुत्व का शाश्वत आधार लेकर चल पड़ा संघ कार्य इन सभी के विरोध के बावजूद और इन सभी की इच्छा के विपरित बढ़ता ही चला गया, व्यापक होता चला गया। फिर इन्हीं विरोधकों ने अपने स्वार्थ के कारण अपनी भूमिका में थोड़ा परिवर्तन करते हुए यह कहना शुरू किया कि हिन्दुत्व तो ठीक है, पर एक नरम (सॉफ्ट) हिन्दुत्व है और एक गरम (हार्ड) हिन्दुत्व है। स्वामी विवेकानंद का नरम हिन्दुत्व है, जो ठीक है, पर संघ का गरम हिन्दुत्व है जो भर्त्सनीय है। इसी खेमे से एक पुस्तक लिखी गयी "Why I am not a Hindu" पर हिन्दुत्व का प्रसार और स्वीकार समाज के सहयोग से बढ़ता ही गया। फिर इसी खेमे से दूसरी पुस्तक लिखी गयी "Why I am a Hindu"- हिन्दुत्व का स्वीकार और विस्तार लगातार बढ़ता ही चला गया, कारण वह



भारत की आत्मा है, भारत के मन की बात है।

फिर इन्हीं निहित स्वार्थी तत्वों ने यह भ्रम फैलाना शुरू किया कि एक 'हिन्दुइज़म' तो अच्छा है, पर "हिन्दुत्व" खराब है क्यों कि वह साम्प्रदायिक, प्रतिगामी और अल्पसंख्य विरोधी है। एक मीडिया संस्थान ने इसी दौरान मुझे प्रश्न पूछा कि हिन्दुइज़म और हिन्दुत्व में क्या अंतर है। मैंने कहा दोनों एक ही तो है। एक अंग्रेज़ी है, दूसरा हिंदी है। इसमें उतना ही फर्क है, जितना गुलाब और रोज में है। डॉक्टर राधाकृष्णन ने लिखी "Hindu view of Life" यह किताब अंग्रेज़ी में लिखी, इसलिए उन्होंने 'हिन्दुइज़म' का प्रयोग किया। उनकी किताब यदि हिंदी में होती तो वे 'हिन्दुत्व' का प्रयोग करते। सावरकर जी अपनी 'हिन्दुत्व' पुस्तक मराठी के बदले यदि अंग्रेज़ी में लिखते तो शायद 'हिन्दुइज़म' का ही प्रयोग करते। हाँ! मेरा यह व्यक्तिगत मानना है कि हिन्दुत्व का सही अंग्रेज़ी अनुवाद 'हिन्दुइज़म' न हो कर हिन्दुनेस (Hinduness) होना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ० मोहन जी भागवत ने विज्ञान भवन में त्रि-दिवसीय व्याख्यान माला में हिन्दू और हिन्दुत्व को पर्याप्त विस्तार से स्पष्ट किया है। परंतु सच जानने में नहीं, अपितु झूठा प्रचार करने के इरादे से जिनका प्रचार चल रहा है वे इस पर ध्यान नहीं देंगे। भारत में **असली वैचारिक संघर्ष भारत की दो विभिन्न अवधारणाओं के बीच में है।** एक भारत की भारतीय अवधारणा है, जिसकी जड़ें भारत की प्राचीन अध्यात्म आधारित जीवन दृष्टि से गहराई तक जुड़ी हैं। और दूसरी भारत की अभारतीय अवधारणा है, जिसके प्रतिमान और प्रेरणा स्रोत भारत के बाहर के हैं।

पत्रकार से राजनेता बने ऐसे एक नेता ने अभी-अभी एक बयान दिया कि इस चुनाव में हिन्दू भारत या हिन्दुत्व भारत के बीच चुनाव करना होगा। इस खेमे के द्वारा हिन्दू भारत बात करना, यह हिन्दुत्व के बढ़ते प्रभाव और विस्तार के कारण ही हो

रहा है। इन की इसमें कोई प्रतिबद्धता नहीं दिखती है। राजकीय दृष्टि से सुविधा के अनुसार इनकी भूमिकाएं बदलती जाती हैं। सारा भारत हिन्दुत्व के कारण एक हो रहा है तो इनकी जातीय, साम्प्रदायिक, प्रादेशिक राजनीति कमज़ोर हो रही है, इनके जनाधार का क्षरण हो रहा है। इन्हें अपनी स्वार्थी राजनीति के लिए समाज को बांटना अनिवार्य है। अब जाति, भाषा, रिलिजन के नाम पर समाज नहीं बंट रहा है तो हिन्दू और हिन्दुत्व के नाम से बाँटने का प्रयास हो रहा है। यह इनके हिन्दू प्रेम या प्रतिबद्धता (Conviction) के कारण नहीं, बल्कि सुविधा (convenience) के कारण ही आ रहा दिखता है। भारत की भोली दिखने वाली जनता मूर्ख नहीं है जो इनके झूठे झाँसे में आ कर ग़लत निर्णय कर ले।

एक शब्द का प्रयोग जान बूझ कर भ्रम फैलाने के लिए किया जा रहा है कि ये लोग हिन्दुत्ववादी या हिन्दुवादी है। यह भी बुद्धि को भ्रमित करने की चाल है। साम्यवादी, समाजवादी, पूँजीवादी तो लोग होंगे, पर ये हिन्दुवाद या हिन्दुत्ववाद कहाँ से आया। यहाँ तो केवल 'हिन्दुत्व' है जो एक 'एकात्म और सर्वांगीण' जीवनदृष्टि है और उसे अपना मानने वाला, उसके प्रकाश में अपना व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक जीवन जीने वाला समाज है जो 'हिन्दू' कहलाता है। फिर ये हिन्दुवादी, हिन्दुत्ववादी शब्द अनावश्यक भ्रम फैलाने के लिए क्यों उपयोग में लाए जा रहे हैं? इसके पीछे का षड्यंत्र पहचान कर, इसके प्रचार से भ्रमित हुए बिना हिन्दुत्व के शाश्वतचिंतन और मूल्यों को प्रस्थापित करना और अपने आचरण से उसे प्रतिष्ठित करने का प्रयास करना चाहिए। इसी से भारत की पहचान, जो दुनिया सदियों से जानती है, प्रकट होगी और समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भारत का पुरुषार्थ प्रकट होगा। अपने "स्वदेशी समाज" नामक निबंध में रविंद्र नाथ ठाकुर कहते हैं, "सबसे पहले हमें, हम जो हैं, वह बनना पड़ेगा"।



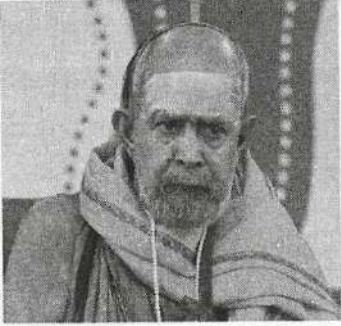
पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरुषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है—सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 जुलाई	जन्म—दिवस	भारत रत्न डा. विधानचन्द्र राय
2 जुलाई	जन्म—तिथि	सिद्धयोगी : स्वामी राम
3 जुलाई	पुण्य—तिथि	विरक्त सन्त : स्वामी रामसुखदास जी
4 जुलाई	स्थापना—दिवस	आजाद हिन्द फौज की स्थापना
5 जुलाई	पुण्य—तिथि	हँसकर मृत्यु को अपनाने वाले अधीश जी
6 जुलाई	जन्म—दिवस	नारी जागरण की अग्रदूत : लक्ष्मीबाई केलकर
7 जुलाई	जन्म—तिथि	मानवता के हमदर्द : गुरु हरिकिशन जी
8 जुलाई	इतिहास—स्मृति	टाइगर हिल की जीत
10 जुलाई	जन्म—दिवस	संकल्प के व्रती : श्री जयगोपाल जी
11 जुलाई	जन्म—तिथि	पहाड़ी गान्धी : बाबा काशीराम
12 जुलाई	जन्म—दिवस	निर्बल की पीड़ा के फिल्मकार : विमल दा
13 जुलाई	बलिदान—दिवस	बाजीप्रभु देशपाण्डे का बलिदान
13 जुलाई	जन्म—तिथि	वेदों के मर्मज्ञ : डा. फतह सिंह
14 जुलाई	पुण्य—तिथि	शिक्षाप्रेमी सन्त स्वामी कल्याणदेव जी महाराज
16 जुलाई	स्मृति—दिवस	जल सेवक : सन्त बलबीर सिंह सींचेवाल
16 जुलाई	जन्म—दिवस	सबके शंकराचार्य : श्री जयेन्द्र सरस्वती
20 जुलाई	पुण्य—तिथि	एक विस्मृत विप्लवी : बटुकेश्वर दत्त
23 जुलाई	जन्म—तिथि	स्वतन्त्रता आन्दोलन में उग्रवाद के प्रणेता
24 जुलाई	बलिदान—दिवस	नरसिंहगढ़ का शेर : कुँवर चैनसिंह
26 जुलाई	जन्म—दिवस	कन्नड़ साहित्य के साधक : डा. भैरप्पा
27 जुलाई	बलिदान—दिवस	वीर बालक शान्तिप्रकाश का बलिदान
28 जुलाई	जन्म—दिवस	विश्व हिन्दू परिषद् और श्री केशवराम शास्त्री
29 जुलाई	पुण्य—तिथि	सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत : ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
31 जुलाई	बलिदान—दिवस	जलियाँवाला के प्रतिशोधी : ऊधम सिंह



समाज सेवा में संलग्न पूज्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती



हिन्दू धर्म में शंकराचार्य का बहुत ऊँचा स्थान है। अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड एवं पूजा आदि के कारण प्रायः शंकराचार्य मन्दिर-मठ तक ही सीमित रहते हैं। शंकराचार्य की

चार प्रमुख पीठों में से एक कांची अत्यधिक प्रतिष्ठित है। इसके शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती इन परम्पराओं को तोड़कर निर्धन बस्तियों में जाते हैं। इस प्रकार उन्होंने अपनी छवि अन्धों से अलग बनाई। हिन्दू संगठन के कार्यों में वे बहुत रुचि लेते हैं। यद्यपि इस कारण उन्हें अनेक गन्दे आरोपों का सामना कर जेल की यातनाएँ भी सहनी पड़ीं।

श्री जयेन्द्र सरस्वती का बचपन का नाम सुब्रह्मण्यम था। उनका जन्म 16 जुलाई, 1935 को तमिलनाडु के इरुलनीकी कस्बे में श्री महादेव अय्यर के घर में हुआ था। पिताजी ने उन्हें नौ वर्ष की अवस्था में वेदों के अध्ययन के लिए कांची कामकोटि मठ में भेज दिया। वहाँ उन्होंने छह वर्ष तक ऋग्वेद व अन्य ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। मठ के 68 वें आचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती ने उनकी प्रतिभा देखकर उन्हें उपनिषद् पढ़ने को कहा। सम्भवतः वे सुब्रह्मण्यम में अपने भावी उत्तराधिकारी को देख रहे थे।

आगे चलकर उन्होंने अपने पिता के साथ अनेक तीर्थों की यात्रा की। वे भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए तिरुमला गये और वहाँ उन्होंने सिर मुण्डवा लिया। 22 मार्च, 1954 उनके जीवन का महत्वपूर्ण दिन था, जब उन्होंने संन्यास ग्रहण किया। सर्वतीर्थ तालाब में कमर तक जल में खड़े होकर उन्होंने प्रश्नोच्चारण मन्त्र का जाप किया और यज्ञोपवीत उतार कर स्वयं को सांसारिक जीवन से

अलग कर लिया। इसके बाद वे अपने गुरु स्वामी चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती द्वारा प्रदत्त भगवा वस्त्र पहन कर तालाब से बाहर आये।

इसके बाद 15 वर्ष तक उन्होंने वेद, व्याकरण मीमांसा तथा न्यायशास्त्र का गहन अध्ययन किया। उनकी प्रखर साधना देखकर कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य स्वामी चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित कर उनका नाम जयेन्द्र सरस्वती रखा। अब उनका अधिकांश समय पूजा-पाठ में बीतने लगापर देश और धर्म की अवस्था देखकर कभी-कभी उनका मन बहुत बेचैन हो उठता था। वे सोचते थे कि चारों ओर से हिन्दू समाज पर संकट घिरे हैं, पर हिन्दू समाज अपने स्वार्थ में ही व्यस्त है।

इन समस्याओं पर विचार करने के लिए वे एक बार मठ छोड़कर कुछ दिन के लिए एकान्त में चले गये। वहाँ से लौटकर उन्होंने पूजा-पाठ एवं कर्मकाण्ड के काम अपने उत्तराधिकारी को सौंप दिये और स्वयं निर्धन हिन्दू बस्तियों में जाकर सेवा-कार्य प्रारम्भ करवाये। उन्हें लगता था कि इस माध्यम से ही निर्धन, अशिक्षित एवं वंचित हिन्दुओं का मन जीता जा सकता है।

उन्होंने मठ के पैसे एवं भक्तों के सहयोग से सैकड़ों विद्यालय एवं चिकित्सालय आदि खुलवाये। इससे तमिलनाडु में हिन्दू जाग्रत एवं संगठित होने लगे। धर्मान्तरण की गतिविधियों पर रोक लगी, पर न जाने क्यों वहाँ की मुख्यमन्त्री जयललिता अपनी सत्ता के मार्ग में उन्हें बाधक समझने लगी। उसने षडयन्त्रपूर्वक उन्हें जेल में ठूस दिया, पर न्यायालय में सब आरोप झूठ सिद्ध हुए। जनता ने भी अगले चुनाव में जयललिता को भारी पराजय दी। आज भी खराब स्वास्थ्य और वृद्धावस्था के बावजूद पूज्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती हिन्दू समाज की सेवा में लगे हैं।



हाई ब्लड प्रेशर 7 संकेत, जाने-उपेक्षा न करें।

□ अतुल मोदी

हाई ब्लड प्रेशर एक गंभीर बीमारी है, जिसका खतरा युवाओं में तेजी से बढ़ रहा है। देर रात तक जागना और वसायुक्त खाने के साथ सिगरेट और शराब तेजी से ब्लड प्रेशर रोगियों की संख्या बढ़ा रहे हैं।

ब्लड प्रेशर का बढ़ना खतरनाक होता है। हाई ब्लड प्रेशर को हाइपरटेंशन या उच्च रक्तचाप भी कहते हैं। आजकल हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ी है। इसका कारण यह है कि लोगों की लाइफ स्टाइल में जिस तरह के परिवर्तन आ रहे हैं, वो इंसान के शरीर के अनुकूल नहीं हैं। खानपान में हानिकारक रसायनों और वसा का प्रयोग, देर रात तक जागना, सिगरेट और शराब का सेवन करना आदि सभी गलत आदतें शरीर में ब्लड प्रेशर बढ़ने का कारण बनती हैं।

हाई ब्लड प्रेशर स्वयं में खतरनाक है और ये कई अन्य बीमारियों का भी कारण बनता है। हाई ब्लड प्रेशर के कारण सबसे ज्यादा खतरा दिल की बीमारी का होता है। हार्ट अटैक, हार्ट फेल्योर और कार्डियक अरेस्ट जैसी कई बीमारियां हाई ब्लड प्रेशर के कारण हो सकती हैं। इसके अलावा ब्रेन स्ट्रोक और किडनी फेल्योर भी हाई ब्लड प्रेशर के कारण हो सकते हैं। शुरुआती अवस्था में हाई ब्लड प्रेशर के संकेत बहुत सामान्य दिखते हैं इसलिए लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं।

शुरुआती लक्षण :

उच्च रक्तचाप के प्रारंभिक लक्षण में संबंधित व्यक्ति के सिर के पीछे और गर्दन में दर्द रहने लगता है। कई बार इस तरह की परेशानी को वह नजरअंदाज कर जाता है, जो आगे चलकर गंभीर समस्या बन जाती है।

तनाव होना :

यदि आप खुद को ज्यादा तनाव में महसूस कर रहे हैं, तो यह उच्च रक्तचाप का संकेत हो

सकता है। ऐसे में व्यक्ति को छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आने लगता है। कई बार वह सही-गलत की भी पहचान भी नहीं कर पाता। किसी भी समस्या से बचने के लिए जरूरी है कि आप जांच करा लें।

सिर चकराना :

उच्च रक्तचाप के लक्षणों में सिर चकराना भी आम है। कई बार शरीर में कमजोरी के कारण भी सिर चकराने की परेशानी हो सकती है। ऐसे कोई लक्षण दिखाई दें, तो पहले अपने डॉक्टर से परामर्श कर लें।

थकावट होना :

यदि आपको थोड़ा काम करने पर थकान महसूस होती है या जरा सा तेज चलने पर परेशानी होती है या फिर आप सीढ़ियां चढ़ने में काफी थक जाते हैं, तब भी आप उच्च रक्तचाप से ग्रस्त हो सकते हैं।

नाक से खून आना :

सांस न आना, लंबी सांस आना या सांस लेने में परेशानी होने पर एक बार अपने चिकित्सक से संपर्क करें। ऐसे में व्यक्ति के उच्च रक्तचाप से ग्रस्त होने की प्रबल आशंका होती है। साथ ही यदि नाक से खून आए, तब भी आपको जांच करानी चाहिए।

नींद न आना :

आमतौर पर उच्च रक्तचाप के रोगियों के साथ यह समस्या होती है कि उन्हें रात में नींद आने में परेशानी होती है। हालांकि यह परेशानी किसी चिंता के कारण या अनिद्रा की वजह से भी हो सकती है।

हृदय की धड़कन बढ़ना :

यदि आप महसूस करते हैं कि आपके हृदय की धड़कन पहले के मुकाबले तेज हो गई है या आपको अपने हृदय क्षेत्र में दर्द महसूस हो रहा है, तो यह उच्च रक्तचाप का भी कारण हो सकता है।



भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निराला नगर, लखनऊ - 226020 (उ.प्र.)

फोन-फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित कार्पस फण्ड से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए-** रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए-** रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए-** रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए-** रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए-** प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए-** रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए-** रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए-** रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट भाऊराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

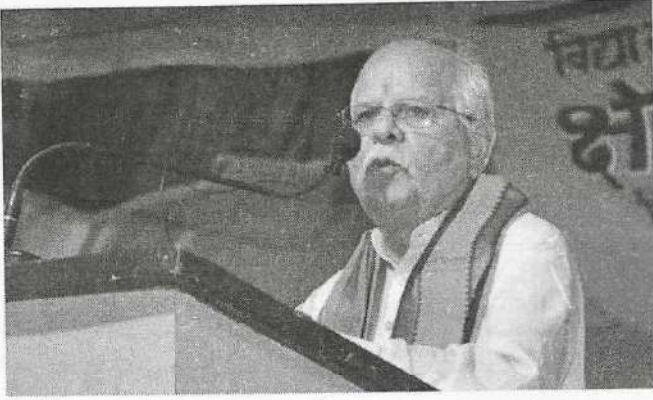
बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. 680610100009948 IFSC: BKID0006806

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. 30448433657 IFSC: SBIN0003813

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।



शिक्षा को प्रदर्शन से दर्शन की ओर ले जाना है - यतीन्द्र



गोरखपुर, विद्या भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री यतीन्द्र जी ने कहा कि शिक्षा आज प्रदर्शन का विषय हो गई है, इसे दर्शन की ओर ले जाना है। शिक्षा व्यवसाय हो गई है, उसे ज्ञान की तरफ ले जाना है। यतीन्द्र जी विद्या भारती (पूर्वी उत्तर प्रदेश) द्वारा आयोजित दस दिवसीय क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में संबोधित कर रहे थे।

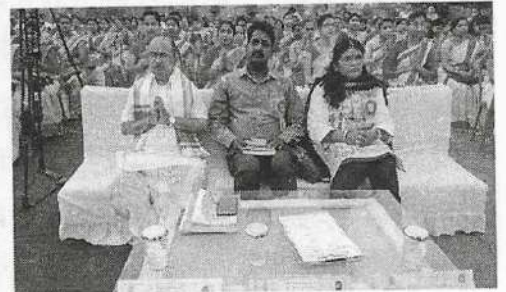
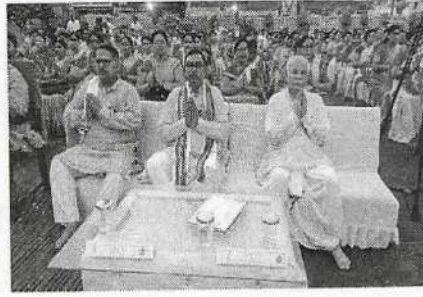
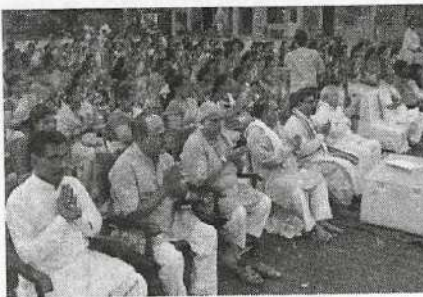
उन्होंने कहा कि शिक्षा आज सरकारों की दासी बनकर रह गई है। यह बहुत भयावह स्थिति है। इससे उबरना होगा। भारत को जाति-धर्म में खंडित करने का षडयंत्र हो रहा है। अंग्रेजों की बनाई शिक्षा व्यवस्था से विद्यार्थियों में व्यसन पैदा हो रहे हैं, विद्यार्थी ड्रग्स के शिकार हो रहे हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था द्वारा हमें जीवन मूल्यों का निर्माण करना है। शिक्षा धर्म से दूर रह

कर अधार्मिक व्यक्ति पैदा करेगी, हमें धर्म आधारित शिक्षा व्यवस्था स्थापित करनी है। भारत की शिक्षा की दिशा तय करना ही विद्या भारती का लक्ष्य है। भारत की शिक्षा को मार्क्स, मैकाले व मदरसा के प्रभाव से मुक्त करना हमारा ध्येय है।

यतीन्द्र जी ने कहा कि हमें भारतीय शिक्षा को प्रदर्शन से दर्शन की ओर ले जाना है। इसके लिए हमें लाखों समर्पित व कुशल कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी। आचार्य व आचार्या शैक्षिक, सामाजिक परिवर्तन व शिक्षण कुशलताओं से अवगत हों, इसलिए समय-समय पर प्रशिक्षण वर्गों का आयोजन किया जाता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने माँ सरस्वती एवं भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात शिशु वाटिका वर्ग में प्रशिक्षार्थियों ने शिशुओं के शिक्षण की विभिन्न विधियों को विविध कार्यक्रमों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की रूपरेखा क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रमुख विजय उपाध्याय जी ने रखी। अध्यक्षता प्रो. सुषमा पाण्डेय (आचार्या, बीएड विभाग गोरखपुर विद्यविद्यालय) ने की, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. धनंजय कुमार (आचार्य मनोविज्ञान, गोरखपुर विवि) उपस्थित रहे।





एवरेस्ट : ऊँचाई के सपने का जोखिम

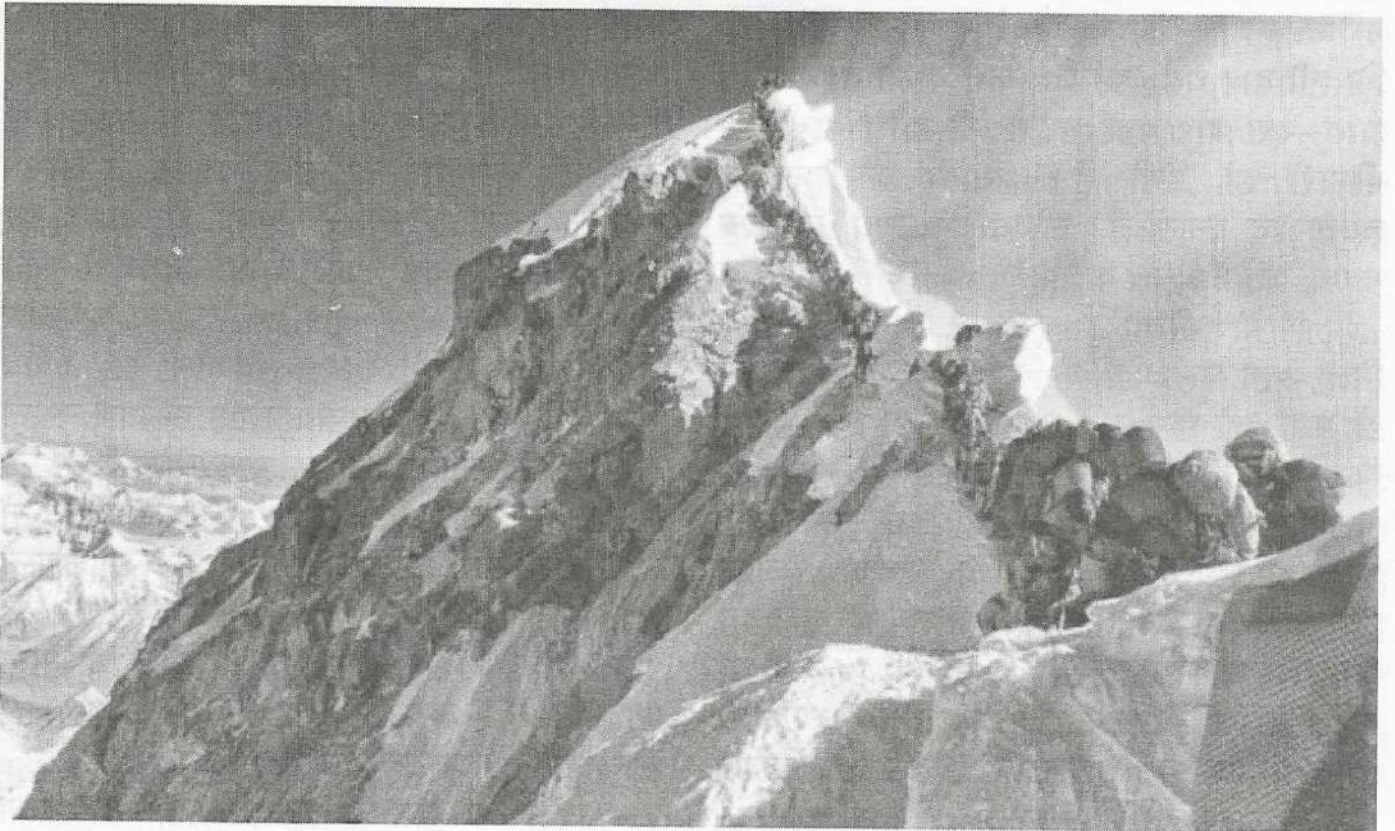
□ डॉ. हरिप्रसाद दुबे

सेवा मानव जीवन का ऐसा दिव्य भाव है, जिससे दुर्लभ सिद्धि मिलती है। सेवा प्रतिकूलताओं को वरदान बनाती है। सेवा का संकल्प देने का देवता भाव है। महत्वाकांक्षा के सत्य और भ्रान्ति में सेवा ही वह अदभुत तत्व है जो मानव जीवन का रक्षा कवच है।

लोकमंगल मानवता का वरदान है। इसकी ऊँचाई में त्याग और श्रम का विशेष स्थान है। दूसरों के कल्याण के लिए देना देवता की वृत्ति है। देवत्व के बिना प्रेरणा स्रोत बनना कठिन है। समाज में दीन से दीन व्यक्ति को कठोर परिश्रम का सार्थक आचरण सन्देश देता है। केवल अपने स्वार्थ लाभ और व्यक्तिगत यश पाने के उद्देश्य से किये कार्यों की अधिकता नकारात्मक बनाती है। पर-पीड़ा में छलक उठने वाले हृदय गंगा जल बन जाते हैं। जीवन-बोध के अभाव में लक्ष्य का निर्धारण नहीं हो पाता। जीवन-बोध के प्रकाश में उपलब्धियों के साथ सार्थकता आती है। मानव जीवन का लक्ष्य यक्ष

प्रश्न बन कर जीवन भर पहली बना रहता है। ऐसा जीवन अस्तित्व के सत्य के अभाव में अनसुलझी गुथी बन जाता है।

भारतीय संस्कृति सिद्धान्त नहीं आचरण है और विश्व कल्याण की कामना इसी संस्कृति में है। संयमित उपभोग, मर्यादों का पालन ही संस्कार है। पर्यावरण, प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। पर्वत नदी, तीर्थ की यहाँ पूजा की परम्परा रही है। सिद्ध स्थलों की अधिकता के कारण उत्तराखण्ड को देवभूमि कहा जाता है। हिमालय हमारा उच्च भाल तो कैलास गौरव-शिखर है। पुण्य बढ़ने पर पावन दर्शन करने का सौभाग्य मिलता है। वर्षों पहले आस्था पर चोट पहुँचने के कारण ही उत्तराखण्ड में भयावह त्रासदी आयी। गलतियाँ नये आविष्कारों के लिए राहें बनाती हैं। सफल वही होता है, जिसने अपनी गलतियों को दोहराना बन्द कर दिया है। मनुष्य की मूल प्रकृति दैवीय होने के कारण उसे अमृतपुत्र कहा गया है। जिस पथ से





दैवीय स्वरूप प्रकट होकर परम और चरम संभावनाएं बने, वही जीवन का लक्ष्य है। अयोग्यता को योग्यता से अधिक अलंकृत करने पर सत्य पर आंच आने लगती है। असत्य की पुनरावृत्ति सत्य जैसी लगती है। विद्या और शिक्षा की उपलब्धि श्रेष्ठ अनुसन्धान का मूल आधार है। स्वतंत्रता आंदोलन में क्रान्तिकारियों ने फांसी का फंदा मातृभूमि के लिए चूमा।

एवरेस्ट की ऊँचाई पर चढ़ाई के सपने का जोखिम बड़ा घातक है। इससे बचना मानवता की रक्षा करने का मंत्र है। शुभी आँखों में भगवान की चमक होती है। विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट है। 8,848 मीटर ऊँची इस चोटी पर पहली बार चढ़ने की चाहे जो जिज्ञासा रही हो पर बाद में यहां पहुंचने को उपलब्धि मानने का भ्रम पाल लिया गया। इस शांत पवित्र शाश्वत चोटी पर चहल पहल करने की चूक आरम्भ कर दी गयी। इस पर्वत चोटी का दर्शन नीचे से भी किया जा सकता था पर इस पर चढ़ने को अपनी व्यक्तिगत ऐतिहासिक जीत का कीर्तिमान मानने की गलती ने अनेक पर्वतारोहियों के प्राण ले लिये। अनेक देशों के अदूरदर्शी लोगों ने स्वयं अपना भविष्य निगल लिया। **एवरेस्ट पर जो चाहे जितनी बार चढ़ें, कोई टोकने वाला तक नहीं। आठ-दस बार वहाँ चढ़ने की कौन मानसिक बीमारी हो गयी है।** अयोग्य को पुरस्कार हास्यास्पद बनाता है। जीवन का लक्ष्य, उद्देश्य मनुष्य, पशु में अन्तर करता है।

किसी को कोई पुरस्कार, अलंकरण क्या मिला, आने वाली पीढ़ी के लिए ऐसा व्यामोह उत्पन्न हो गया, जो कम होने का नाम नहीं ले रहा है। कितनी विचित्र समस्या बढ़ गई है। देश के अलग-अलग राज्यों से चढ़ने के लिए अलग-अलग आरक्षित वर्ग के बनकर सैलानी एवरेस्ट पर चढ़ने की होड़ लगाने लगे हैं। **इस वर्ष अब तक चार भारतीयों के अलावा अन्य देशों के छः लोगों ने एवरेस्ट पर चढ़ने के प्रयास में प्राण गंवाया है।** एवरेस्ट पर बढ़ती अप्रत्याशित भीड़ के कारण इतनी अधिक संख्या में प्रतिवर्ष काल

कवलित होते हैं। अब तक 308 लोगों ने प्राण गंवाया।

एवरेस्ट पर जाने से रोकने वाला कोई नहीं है। वहां पर भीड़ का वातावरण क्यों न बने। **टेबल टेनिस की दो टेबल के बराबर स्थान में 15 से 20 पर्वतारोही खड़े होने के लिए विवश हैं।** आगे बढ़ने के लिए लोगों को अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। एवरेस्ट से चढ़ाई कर लौटे डॉ० एड डोरिंग ने अपने संस्मरणों से पूरे विश्व को आश्चर्य चकित किया है। न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार अमेरिकी राज्य एरिजोना निवासी डोरिंग ने बताया—“यह बेहद डरावना था। वहां किसी चिड़ियाघर जैसा लग रहा था।”

अपनी यात्रा की पल-पल की जानकारी देते रहना एक बड़ा संकट बनी है। **हर व्यक्ति सेल्फी लेने के चक्कर में एक दूसरे को धक्का देने की होड़ में लगा रहा।** चोटी के छोटे से समतल हिस्से पर 15 से 20 लोग एकत्रित थे। वहां पहुंचने के लिए घंटों लाइन में खड़े रहना पड़ा। सभी परस्पर सटे हुए थे। इस बीच डोरिंग को जाना पड़ा जिसकी कुछ समय पहले सांस टूट गई थी। प्राण की बाजी लगाकर ऐसी यात्राएं कितने प्रश्न बनाती है। समय-समय पर अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठों पर भारत के अनेक राज्यों से एवरेस्ट पर जाने वाले लोगों के गुम होने के समाचार आते रहते हैं। कोई राज्य का, कोई जाति को, कोई धर्म का, कोई दिव्यांग के रूप में समस्या बढ़ाने में लगा है। **ऐसी घटनाओं पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोक लगवाने की आवश्यकता है।** 28 और 29 मई को समाचार दुखद आये। अमेरिका के वकील 62 वर्षीय किस्टोफर जॉन कुलिश पर्वतारोही के प्राण गंवाने के साथ सांस तोड़ने वालों की संख्या ग्यारह हो गई है। पर्यटन विभाग की निदेशक मीरा आचार्य ने काठमांडू में बताया कि लौटने के समय कुलिश ने प्राण छोड़ा। शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ाकर एवरेस्ट पर न चढ़ने की प्रेरणा देने का अब समय आ गया है। प्रतिभा और परिश्रम, संघर्ष को सकारात्मक लक्ष्य सुखद बदलाव का सशक्त संदेश है।

शिक्षा के लिए लालायित माता-पिता का



अपना पेट काटकर बच्चों की पढ़ाई में कोई कमी न करने का जुनून इतना योग्य बना देता है कि विश्व देखता है। शिक्षा दुनिया की सबसे बड़ी पूंजी है। सामान्य व्यक्ति का संसार से जाना मृत्यु है तो किसी अद्वितीय लक्ष्य के लिए महान व्यक्ति का देवलोक गमन करना निर्वाण कहलाता है। दिव्य जीवन कितना सरल, महान है, पर बहुत कम लोग इसे अपनाते हैं। विवेक मानव जीवन का प्रकाश है जो उसे पशु से पृथक करके विशिष्ट बनाता है। **शाश्वत शान्ति एवरेस्ट पर चढ़कर नहीं मिलती।** साधना के तप से ऊँचाई का शिखर मिलता है। **पावन स्थलों को शान्तिमय रखने की आवश्यकता है।**

यहाँ 1921 में चढ़ने का प्रयास असफल रहा।

एवरेस्ट शिखर पर अशान्ति, छेड़छाड़ करना विश्व गौरव से खिलवाड़ करना है। सफलता का अर्थ धन का मद नहीं है सफलता वह है जो समाज के लिए किया गया सार्थक योगदान

है। बिना पद और धन के प्राप्त कद सामाजिक हित के लिए होता है। विचारधारा की विचार हीनता कूप मण्डूक बनाती है। अति सर्वत्र वर्जयते। झूठ और मूर्खता की अधिकता एक दिन खुल जाती है पर सत्य की अधिकता जीत का कारण बनाती है।

अन्धे के हाथ बटेर लग जाने के कारण एवरेस्ट पर चढ़ाई हो रही है। नेपाल के सर्वाधिक पर्वतारोही एवरेस्ट से नहीं लौट पाये। समाचार एजेंसी फ्रांस प्रेस ने माउन्ट एवरेस्ट (सगर माथा) का एक फोटो जारी किया है। इससे पता चलता है कि पर्वतारोही जितनी भारी संख्या में शिखर पर उमड़ रहे हैं उससे वहाँ ट्रैफिक जाम का वातावरण हो गया है। नौ दिनों में एवरेस्ट शिखर पर ग्यारह पर्वतारोहियों की मौत हो गई। एक महिला पर्वतारोही के शव के ऊपर से लांघकर आगे

बढ़ने में हमारी सभ्यता के साथ हमारी निर्दयता भी उस शिखर पर पहुंच गई है। ग्यारह पर्वतारोहियों की मृत्यु के समय वहाँ कोई बर्फीली तूफान और मौसम की खराबी परेशानी का कारण नहीं बना। अधिकतर मामलों में फ्रास्ट बाइट अर्थात् बर्फीली ठंडक ही रही। ऐसा माना जाता है। कि एवरेस्ट के आधार शिविर से चलने पर जितनी जल्दी हो सके शिखर तक पहुंचकर वापस आया जाय। पर अब यह इतना सरल नहीं है। आजकल बहुत सारा समय वहाँ सेल्फी लेने में बीतता है। जितना अधिक समय आने जाने में देते हैं बर्फीली ठंड की चपेट का खतरा बढ़ जाता है। शव पर्वतारोहियों को राह दिखाने के कारण भविष्य के लिए मील के पत्थर बनते हैं। एवरेस्ट पर शव के न सड़ने का कारण पर्वत का तापमान है।



नेपाल के लिए एवरेस्ट डालर की खान बना है। हर पर्वतारोही से ग्यारह हजार डालर की फीस ली जाती है। चीन कम फीस में एवरेस्ट पर्यटन के नाम

पर भेजता है। दुनिया में यह धारणा बनने लगी है कि पर्याप्त धन खर्च करने वाले एवरेस्ट पर चढ़कर झन्डा भी फहरा सकते हैं। 1953 में जब शेरपा तेनजिंग और एडमंड हिलेरी पहली बार एवरेस्ट शिखर पर पहुँचे थे तब मानव सभ्यता के लिए यह एक दुर्लभ क्षण था। वे वहाँ पहुंच गए थे, जहाँ इसके पहले कोई मानव नहीं जा सका था। लेकिन अब एवरेस्ट का पर्वतारोहण महज एक खेल बनकर रह गया है। पैसे का खेल भी चल रहा है। एवरेस्ट पर चढ़ाई करना आजकल फैशन हो गया है। पर्यावरण बचाओ के नाम पर ढोंग हो रहा है। हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में इस पर गुहार लगाने का समय आ गया है। सगरमाथा (एवरेस्ट) को इन दोनों से मुक्ति दिलाने का समय है। एवरेस्ट पर चढ़ने के सपने से बचना है।



योगासनों के गुण और लाभ

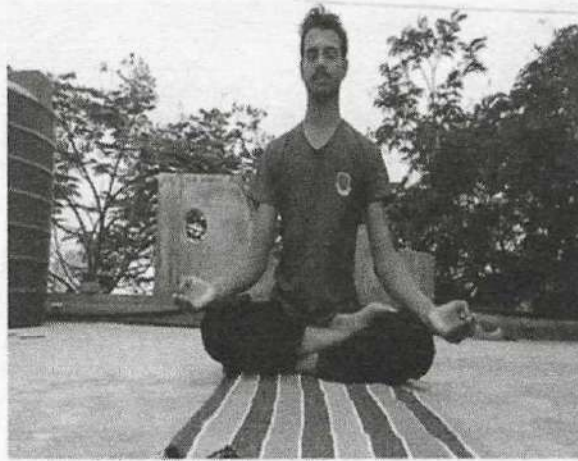
□ श्यामबाबू

योगासनों का सबसे बड़ा गुण यह है कि वे सहज साध्य और सर्वसुलभ हैं।

योगासन ऐसी व्यायाम पद्धति है जिसमें न तो कुछ विशेष व्यय होता है और न इतनी साधन-सामग्री की आवश्यकता होती है। योगासन अमीर-गरीब, बूढ़े-जवान, सबल-निर्बल सभी स्त्री-पुरुष कर सकते हैं। आसनों में जहां मांसपेशियों को तानने, सिकोड़ने और ऎंठने वाली क्रियायें करनी पड़ती हैं, वही दूसरी ओर साथ-साथ तनाव-खिचाव दूर करने वाली क्रियायें भी होती रहती हैं, जिससे शरीर की थकान मिट जाती है और आसनों से व्यय शक्ति वापिस मिल जाती है। शरीर और मन को तरोताजा करने, उनकी खोई हुई शक्ति की पूर्ति कर देने और आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से भी योगासनों का अपना अलग महत्त्व है। आइये जानते हैं योगासन के गुण और लाभ के बारे में। क्या हैं?

योगासन के लाभ-

1. योगासनों से भीतरी ग्रंथियां अपना काम अच्छी तरह कर सकती हैं और युवावस्था बनाए रखने एवं वीर्य रक्षा में सहायक होती है।
2. योगासनों द्वारा पेट की भली-भांति सुचारु रूप से सफाई होती है और पाचन अंग पुष्ट होते हैं। पाचन-संस्थान में गड़बड़ियां उत्पन्न नहीं होती।
3. योगासन मेरुदण्ड-रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाते हैं और व्यय हुई नाड़ी शक्ति की पूर्ति करते हैं।

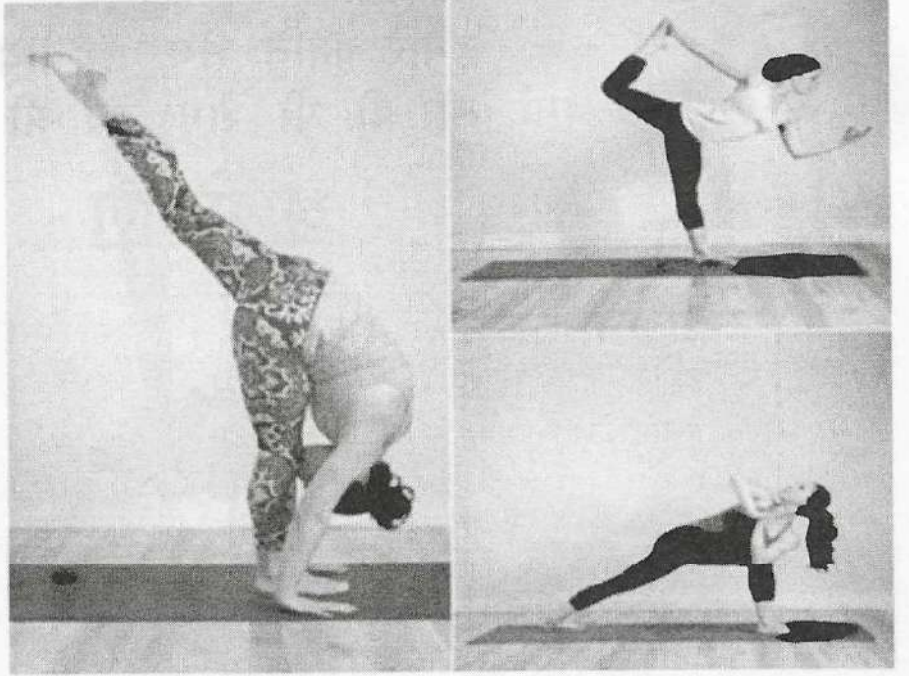


4. योगासन पेशियों को शक्ति प्रदान करते हैं। इससे मोटापा घटता है और दुर्बल-पतला व्यक्ति तंदुरुस्त होता है।
5. योगासन स्त्रियों की शरीर रचना के लिए विशेष अनुकूल हैं। वे उनमें सुन्दरता, सम्यक-विकास, सुघड़ता और गति, सौन्दर्य आदि के गुण उत्पन्न करते हैं।
6. योगासनों से बुद्धि की वृद्धि होती है और धारणा शक्ति को नई स्फूर्ति एवं ताजगी मिलती है। ऊपर उठने वाली प्रवृत्तियां जागृत होती हैं और आत्मा-सुधार के प्रयत्न बढ़ जाते हैं।
7. योगासन स्त्रियों और पुरुषों को संयमी एवं आहार-विहार में मध्यम मार्ग का अनुकरण करने वाला बनाते हैं, अतः मन और शरीर को स्थाई तथा सम्पूर्ण स्वास्थ्य मिलता है।
8. योगासन श्वास-क्रिया का नियमन करते हैं, हृदय और फेफड़ों को बल देते हैं, रक्त को शुद्ध करते हैं और मन में स्थिरता पैदा कर संकल्प शक्ति को बढ़ाते हैं।
9. योगासन शारीरिक स्वास्थ्य के लिए वरदान स्वरूप हैं क्योंकि इनमें शरीर के समस्त भागों पर प्रभाव पड़ता है, और वह अपने कार्य सुचारु रूप से करते हैं।
10. योगासन रोग विकारों को नष्ट करते हैं, रोगों से रक्षा करते हैं, शरीर को निरोग, स्वस्थ एवं बलिष्ठ बनाए रखते हैं।
11. आसनों से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। आसनों का निरन्तर अभ्यास करने वाले को



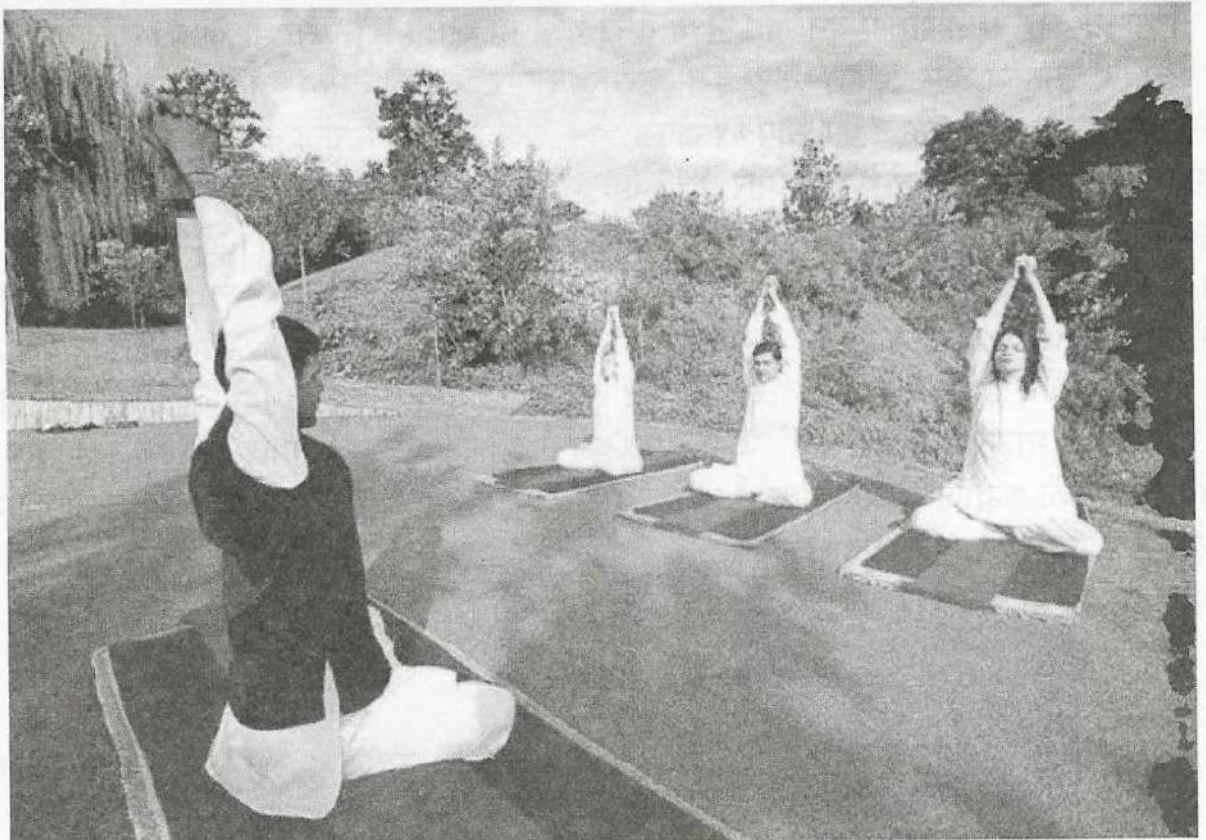
चश्में की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

12. योगासन से शरीर के प्रत्येक अंग का व्यायाम होता है, जिससे शरीर पुष्ट, स्वस्थ एवं सुदृढ़ बनता है। आसन शरीर के पांच मुख्यांगों, स्नायु तंत्र, रक्ताभिगमन तंत्र, श्वासोच्छ्वास तंत्र की क्रियाओं का व्यवस्थित रूप से संचालन करते हैं जिससे शरीर पूर्णतः स्वस्थ बना रहता है और कोई रोग नहीं होने पाता। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक सभी क्षेत्रों के विकास में आसनों का अधिकार है। अन्य व्यायाम पद्धतियां केवल बाह्य शरीर को ही प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं, जब



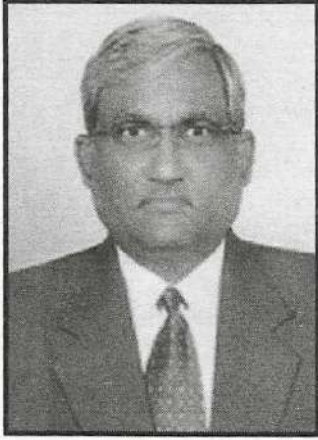
कि योगासन मानव का चहुँमुखी विकास करते हैं।

रूम न. 17 सुभाष हाता
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ-226007
मो0- 9454049918

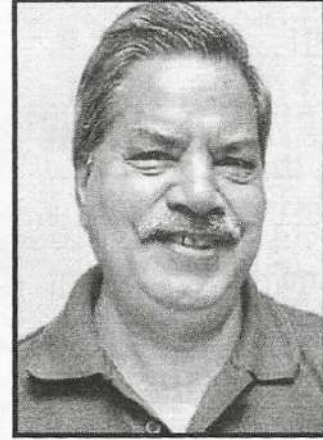
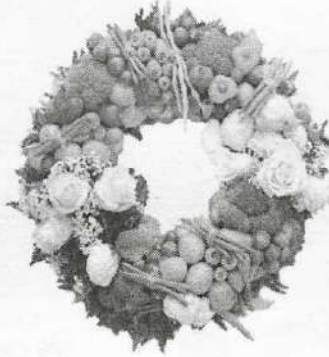




हमारे कीर्ति शेष वन्दनीय –
डॉ. अनिल वर्मा, डॉ. वी. पी. शर्मा एवं श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य'
श्रद्धांजलि



डॉ. वी. पी. शर्मा



श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य'

मानव परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। परमात्मा के वे समस्त गुण मानव में विद्यमान रहते हैं। इसीलिए मानव में अपने अन्तर्निहित गुणों को विकसित कर देवत्व प्राप्त करने की क्षमता विद्यमान रहती है तभी तो मानव—नर से नारायण बन कर विश्व वन्द्य वन्ध हो जाता है। ऐसी ही कुछ विभूतियां जिन्होंने अपनी सेवाएं समाज को अर्पित कर इस संसार—सागर में कीर्तिमान अर्जित किया था, अपना तन—मन—धन सब कुछ समाज को सौंपकर अपने ज्ञान—बल बुद्धि से समाज को जागरूक कर, सेवा कर एक मानक स्थापित किया जो आज हमारे बीच नहीं है उनका पार्थिक शरीर पंचतत्वों में विलीन हो गया है। एक प्रतिष्ठित बाल रोग विशेषज्ञ के रूप में डॉ० अनिल वर्मा, हड्डी रोग विशेषज्ञ के रूप में के.जी.एम. यू. से सेवानिवृत्त डा० वी.पी. शर्मा तथा राज्य सभा के पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ स्वतंत्र लेखक पत्रकार के रूप में ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाने वाले श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य' (दिनांक 13 जून 2019) जिनका यश शरीर आज भी हमारे बीच हमें प्रेरित और उत्साहित कर रहा है, इन तीनों दिवंगत विभूतियों को अपने से दूर होता हुआ पाकर भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सेवा चेतना एवं सेवासंवाद परिवार शोकाकुल है। हम सभी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि सभी को अपने श्रीचरणों में स्थान देकर मुक्ति प्रदान करें।

शान्ति: शान्ति: शान्ति:

सम्पादक
सेवा संवाद एवं
भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार

नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में नेत्र परीक्षण



नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में नेत्र परीक्षण करते हुए चिकित्सक गण

नेत्र कुम्भ सम्मान समारोह नई दिल्ली

